इसरो isro

दिशा

अंक:13, गृह-पत्रिका, अं.वि./इसरो मु.

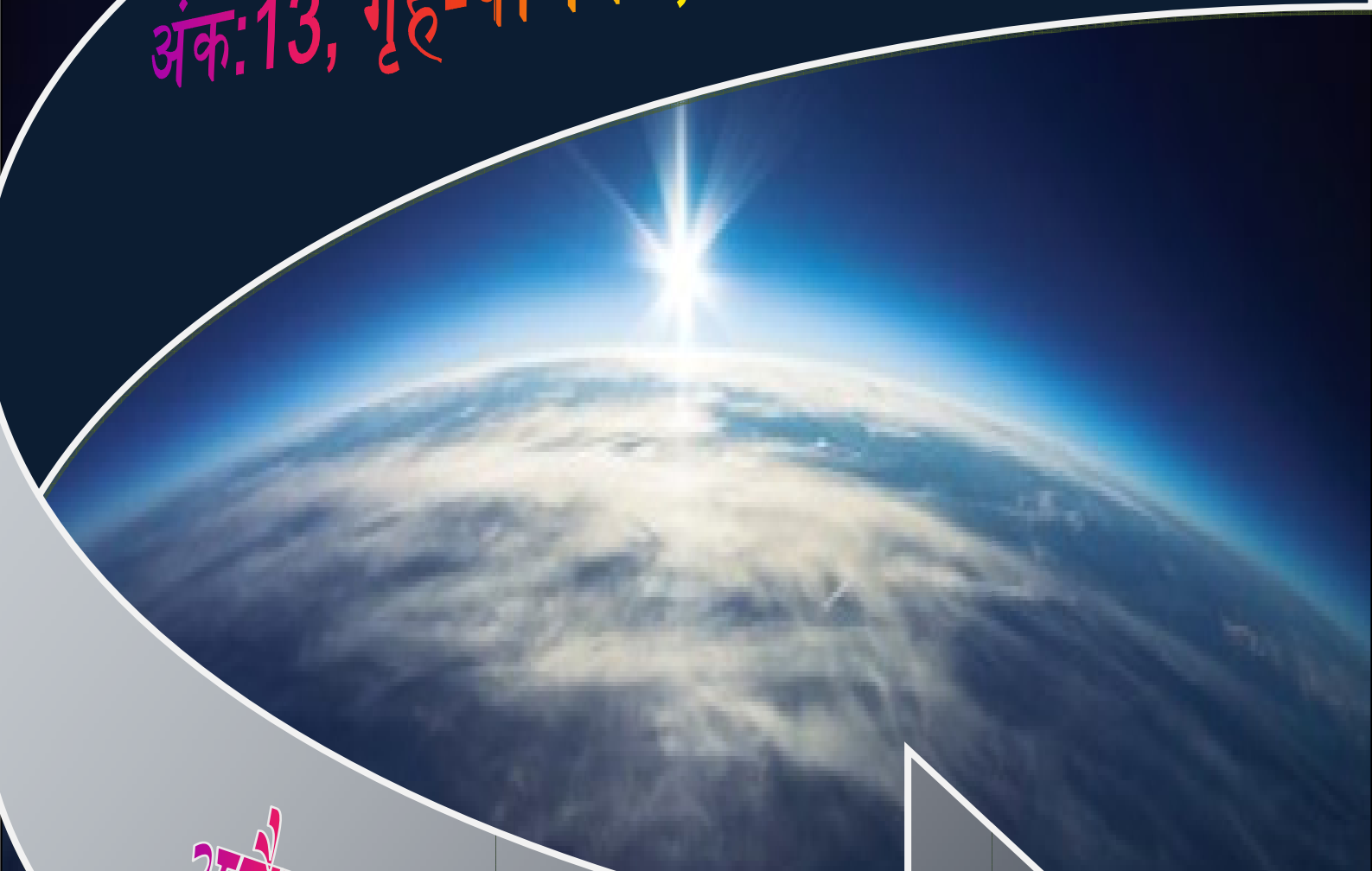

अप्रैल 2021 से सितंबर 2021 तक

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, मुख्यालय
अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

14.09.2021 को नई दिल्ली में आयोजित समारोह में

माननीय गृह राज्यमंत्री श्री निशिथ प्रमाणिक जी के कर-कमलों से वर्ष 2019-20 के लिए अंतरिक्ष विभाग की ओर से राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (प्रथम) ग्रहण करते हुए श्री महेश्वर राव एम., संयुक्त सचिव एवं वित्त सलाहकार, अंतरिक्ष विभाग।

भारत सरकार
अन्तरिक्ष विभाग
अन्तरिक्ष भवन, न्यू बी ई एल रोड
बेंगलूर – 560 094. भारत
तार : स्पेस फैक्स : +91-80-2351 1829
दूरभाष : +91-80 -2341 6393

सत्यमेव जयते

GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF SPACE
Antariksh Bhavan, New BEL Road
Bangalore - 560 094, India.
Grams : Space Fax : +91-80-2351 1829
Telephone : +91-80-2341 6393
e-mail : sandhyavs@isro.gov.in

ಸಂಧ್ಯಾ ವೇಣುಗೋಪಾಲ್ ಶರ್ಮ, ಭಾ.ಆ.ಸೇ.
संध्या वेणुगोपाल शर्मा, भा.प्र.से.
SANDHYA VENUGOPAL SHARMA, I.A.S.
ಹೆಚ್ಚುವರಿ ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿ / अपर सचिव / Additional Secretary

संदेश

राजभाषा हिंदी का प्रभावी प्रचार-प्रसार करने में अंतरिक्ष विभाग तथा उसके विभिन्न केंद्रों/यूनिटों द्वारा प्रकाशित होने वाली गृह-पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान है।

इसी क्रम में, अंतरिक्ष विभाग / इसरो मुख्यालय की गृह-पत्रिका "दिशा" भी अपनी अहम भूमिका निभा रही है। प्रत्येक अंक में यह प्रयास रहता है कि बेहतरीन सामग्री दिशा का अंग बने, जिससे कि पाठक वर्ग संतुष्ट हो सके। साथ ही साथ, हमें पाठकों की प्रतिक्रिया का भी बेसब्री से इंतजार रहता है, ताकि हम हर बार एक बेहतर अंक प्रस्तुत कर सकें।

शुभकामनाओं सहित...

Sandhya V

(संध्या वेणुगोपाल शर्मा)
अपर सचिव, अं.वि.

संपादक की कलम से...

"दिशा" का अंक - 13 आपके समक्ष है। हर बार की तरह, पत्रिका में रोचक व उपयोगी सामग्री का समावेश किया गया है। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए विभाग की विभिन्न "राजभाषा प्रोत्साहन योजनाओं" को सरल तरीके से दर्शाया गया है।

दिशा के 12वें अंक पर प्रबुद्ध पाठकों की प्रतिक्रियाएं हमारा उत्साह और बढ़ाऐंगी। आपके सुझावों व टिप्पणियों की हम आतुरता से प्रतीक्षा करते हैं। आशा है, आपका सहयोग हमें भविष्य में भी इसी तरह मिलता रहेगा।

(डॉ. पी.के. जैन)
मुख्य संपादक 'दिशा'

“दिशा” पत्रिका अपने आप में अनेक विषयों को समाविष्ट किए हुए है। साहित्य की विभिन्न विधाओं को इसमें स्थान दिया गया है। संपादक मंडल की यह कोशिश होती है कि हर बार इसका एक अलग ही रूप पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हो, इसलिए बड़ी ही सावधानी एवं मेहनत से लेखन सामग्री का चयन तथा प्रकाशन किया जाता है। इस अंक में भी पाठकों को अपार हर्ष और संतोष का अनुभव होने वाला है। पूरी कोशिश की गई है कि सभी प्रकार की साहित्यिक सामग्री से ‘दिशा’ के इस अंक को सजाया जाए।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि ‘दिशा’ के इस अंक को पढ़कर आप सभी संतुष्ट होंगे और साथ ही यह भी अनुरोध है कि अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझाव भेजना न भूलें, ताकि हम भविष्य में और अधिक बेहतरीन अंक आप सबके समक्ष प्रस्तुत कर सकें।

शुभकामनाओं सहित...

(डॉ. शंकर कुमार)
संयुक्त निदेशक (रा.भा.)

अप्रैल 2021 – सितंबर 2021 अंक - 13

दिशा

अंतरिक्ष विभाग की गृह-पत्रिका

मुख्य संरक्षक
डॉ. कै. शिवन

संरक्षक
श्रीमती संध्या वेणुगोपाल शर्मा

संपादक मंडल

मुख्य संपादक
डॉ. पी. के. जैन
डॉ. शंकर कुमार

संपादक सदस्य
डॉ. राजीव जायसवाल
बिपुल दास
डॉ. महेश्वर घनकोट

संपादन सहयोग
रश्मि ठाकुर
वीणा गुणवंत माटे
गुरूप्रसाद यादव
अम्बिका द्विवेदी
प्रत्युष कुमार
निशांत कुमार शर्मा
जीवन कुमार सिन्हा

अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया भेजें
संपादक मंडल 'दिशा'
अंतरिक्ष विभाग/इसरो मु.
अंतरिक्ष भवन
न्यू बी.ई.एल. रोड, बेंगलूरु - 560 094

इस अंक में... **पृ.सं.**

लेख
- सफलता 1
- पंचायती राज 4
- दहेज – एक अभिशाप 7
- शहरों में वन 8
- पीढ़ियों का टकराव – समन्वय ही समाधान 10
- जैसी करनी वैसी भरनी 15
- महिला क्लब बैठक 17
- हमारा प्यारा भारत 21

कहानी
- बाढ़ और मगरमच्छ 23
- सबरी 30

कविता
- रिश्तों की रोशनी 3
- जिंदगी 12
- कोशिश 14

शेरो-शायरी
- शेरो-शायरी 29

पुरस्कार
- उत्कृष्ट रचनाओं के लिए पुरस्कार 42

गतिविधियाँ 35
राजभाषा प्रोत्साहन योजनाएं 40
शुभकामनाएँ 43
सुस्वागतम् 44
प्रतिक्रिया 45

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों और मतों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। हिंदी अनुभाग, अंतरिक्ष विभाग/इसरो मु. की अनुमति के बिना इस पत्रिका की कोई भी रचना किसी प्रकार से उद्धृत नहीं की जानी चाहिए।

केवल आंतरिक परिचालन के लिए

सफलता

गोविंदराज वी.
स्टाफ कार चालक-ए, अं.वि.

सफलता का क्या रहस्य है? यह तैयारी, कड़ी मेहनत और असफलता से सीखने का परिणाम है।

(डॉ. के. कस्तूरीरंगन)

इसरो के पूर्व अध्यक्ष के कस्तूरीरंगन ने एन.आई.आई.टी. विश्वविद्यालय के नए अध्यक्ष के रूप में पदभार ग्रहण किया है।

पद्मविभूषण प्राप्तकर्ता, कस्तूरीरंगन ने 1994 से 2003 तक भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का नेतृत्व किया। उन्होंने राजस्थान के केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के रूप में भी काम किया है।

उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मसौदा तैयार करने के लिए मानव संसाधन विकास समिति की अध्यक्षता की, और इसे मई 2019 में केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री को प्रस्तुत किया।

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं नई शिक्षा नीति तैयार करने वाली समिति के अध्यक्ष कस्तूरीरंगन ने कहा कि नई शिक्षा नीति में कोई भी भाषा किसी पर थोपी नहीं गई है और त्रिभाषा फार्मूले को लेकर लचीला रुख प्रस्तावित किया गया है। इसरो के पूर्व प्रमुख ने कहा कि पांचवीं कक्षा तक के निर्देश का माध्यम स्थानीय भाषा अपनाना शिक्षा के प्रारंभिक चरण में महत्वपूर्ण है, क्योंकि बच्चा अपनी मातृभाषा और स्थानीय भाषा में चीजों के प्रति अच्छी समझ बनाता है और अपनी रचनात्मकता व्यक्त करता है।

(प्रो. यू. आर. राव)

उडुपि रामचंद्र राव एक भारतीय अंतरिक्ष वैज्ञानिक एवं भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के अध्यक्ष थे।

वे तिरुवनंतपुरम, अहमदाबाद एवं नेहरू तारामंडल व भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला के गवर्निंग काउंसिल के अध्यक्ष थे। साथ ही साथ तिरुवनंतपुरम में भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान के अध्यक्ष भी थे।

भारत सरकार ने प्रोफेसर राव को 1976 में पद्मभूषण एवं 2017 में पद्मविभूषण से सम्मानित किया। उन्हें सोसाइटी ऑफ सैटेलाइट प्रोफेशनल्स इंटरनेशनल के एक सम्मलेन में 19 मार्च 2013 को वाशिंगटन के सैटेलाइट हॉल ऑफ फेम में शामिल किया गया था।

इसके साथ वह इसमें शामिल होने वाले पहले भारतीय बने।

उन्हें 15 मई 2016 को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्षयात्री महासंघ में भी शामिल किया गया। इस तरह की उपलब्धि हासिल करने वाले वे पहले भारतीय भी थे।

(श्री आ. सी. किरण कुमार)

श्री किरण कुमार ने 1975 में इसरो के अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र से अपने कैरियर की शुरुआत की थी। बाद में, वह इस केंद्र के सह निदेशक और मार्च 2012 में अंतरिक्ष उपयोग केंद्र के निदेशक बने। उन्होंने एयरबोर्न इलेक्ट्रो-ऑप्टिकल इमेजिंग सेंसर के निर्माण और विकास, भास्कर टी.वी. पेलोड से लेकर वर्तमान मार्स कलर कैमरा, थर्मल इंफ्रारेड इमेजिंग स्पेक्ट्रोमीटर और भारत के मार्स आर्बिटर अंतरिक्ष यान के मार्स उपकरणों के लिए मीथेन सेंसर के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

श्री किरण कुमार ने मंगल ग्रह की ओर भेजे गए मार्स आर्बिटर अंतरिक्ष यान के साथ-साथ इसे मंगल की कक्षा में स्थापित करने के मामले में सफलतापूर्वक रणनीतियाँ बनाई। उन्होंने भूमि, महासागर, वातावरण और ग्रह से जुड़े अध्ययनों में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

श्री किरण कुमार ने अंतरराष्ट्रीय मौसम विज्ञान संगठन, भू- प्रेक्षण उपग्रह समिति और नागरिक अंतरिक्ष सहयोग पर भारत-अमरीका संयुक्त कार्यकारी समूह, जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों में इसरो का प्रतिनिधित्व किया।

(श्री एस. सोमनाथ)

श्री सोमनाथ एक भारतीय एयरोस्पेस इंजीनियर और रॉकेट टेक्नोलॉजिस्ट हैं। वह वर्तमान में विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र, तिरुवनंतपुरम के निदेशक हैं। उन्होंने द्रव नोदन प्रणाली केंद्र, तिरुवनंतपुरम के निदेशक के रूप में भी कार्य किया।

श्री सोमनाथ को प्रमोचक रॉकेट डिजाइन में उनके योगदान के लिए जाना जाता है, विशेष रूप से प्रमोचक रॉकेट प्रणाली इंजीनियरिंग, संरचनात्मक डिजाइन, संरचनात्मक गतिशीलता और आतिशबाज़ी बनाने के विद्या क्षेत्रों में।

कैबिनेट की नियुक्ति समिति ने उन्हें भारत सरकार में सचिव के पद हेतु मंजूरी दे दी है।

*****

रिश्तों की रोशनी

वीणा गुणवंत माटे
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, इसरो मु.

जन्म से ही अनायास बन जाते हैं, कुछ रिश्ते
भाव-भीनी झंकृत तारों से बने होते हैं कुछ रिश्ते
कुछ रिश्ते रास्तों पर चलते-चलते बन जाते हैं,
तो कुछ रिश्तों से रास्ते अलग-अलग हो जाते हैं।।

रिश्तों और रास्तों का भी अजीब खेल है,
कभी रिश्ते, रास्ते मिलाते हैं तो कभी रिश्ते, रास्ते दूर ले जाते हैं,
जिंदगी के सफर में रिश्ते बनते भांति-भांति के,
कुछ खून के, कुछ दोस्ती के, तो कुछ जन्म-जन्मांतर के।।

रूठे को मनाना रिश्ते की रागिनी है,
जैसे निशा के बाद भोर का आना लाज़िमी है,
स्वार्थ की नींव पर टिके रिश्ते का वजूद नहीं होता,
अपनेपन की जड़ों पर अडिग रिश्तों का मोल-भाव नहीं होता।।

न रिश्ते बदलने का भाव हो, ना ही रिश्ता कोई भार हो,
जो जैसा है, उसे वैसा अपनाना ही रिश्तों का आधार हो,
हर-एक रिश्ते की अपनी ही एक अहमियत होती है,
कभी समझौता, कभी समझदारी, तो कभी सूझ-बूझ की जरूरत होती है।।

*****

पंचायती राज

तपन कुमार पांडेय
उच्च श्रेणी लिपिक, अं.वि.

भारत में पंचायती राज का शुभारंभ-

भारत में पंचायती राज व्यवस्था की शुरुआत का मूल गांधी जी के गांधीवादी दर्शन में देखा जा सकता हैं, जहां गांधी जी गांवों को सशक्त बनाना चाहते थे तथा पंचायतों के शासन को देश के विकास का मुख्य आधार मानते थे। यदि हम स्वतंत्रता के पश्चात की बात करें, तो 1958 में गठित बलवंतराय मेहता समिति, जिसने पंचायती राज संस्थाओं के विकास की रूपरेखा प्रस्तुत की इस सोपान में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इस समिति के महत्व का भान इस तथ्य से ही हो जाता है कि भारत में पंचायती राज का जनक बलवंत राय मेहता को माना जाता है।

बलवंत राय मेहता समिति की सिफारिशों के आधार पर 2 अक्टूबर 1959 को राजस्थान के नागौर जिले में तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने पंचायती राज व्यवस्था की नींव रखी। उसके बाद देश के विभिन्न राज्यों ने पंचायती राज व्यवस्थाओं को अपनाया।

वर्तमान में पंचायती राज का स्वरूप-

1993 के 73वें संविधान संशोधन के माध्यम से पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया है। आज देश के प्रत्येक राज्य में त्रि-स्तरीय पंचायतें (ग्राम स्तरीय, क्षेत्र (ब्लॉक) स्तरीय और जिला स्तरीय) विद्यमान हैं। उपरोक्त संविधान संशोधन के माध्यम से संविधान में एक नई अनुसूची जोड़ी गई तथा पंचायतों के कार्य करने के लिए 29 विषय प्रदान किए गए।

क्या पंचायती राज भारत में सत्ता के विकेंद्रीकरण में सहायक हुआ है?

भारत की बहुसंख्यक आबादी कृषि पर आधारित है तथा गांवों में निवास करती है। भारत अपने मूल स्वरूप में गांवों का देश है तथा जनसंख्या के बृहत आकार को देखते हुए सत्ता का केंद्रीकरण करके सबका विकास लोकतांत्रिक स्वरूप वाले देश में बहुत मुश्किल है। केंद्रीकृत होकर सबके लिए नीतियां बनाना और उन्हें लागू करना एक कठिन कार्य है, क्योंकि हर गांव, क्षेत्र, जनपद, राज्य की समस्याएं भिन्न-भिन्न हैं, इसलिए "वन साइज फिट्स ऑल" वाला दृष्टिकोण अनुकूल नहीं है। इससे कई समस्याएं अनसुलझी रह जाएंगी तथा विकास संबंधी आकांक्षा भी पूरी नहीं हो पाएगी। इन सबको ध्यान में रखते हुए स्वतंत्रता के बाद से सत्ता के विकेंद्रीकरण के बारे मे कार्य करना प्रारंभ कर दिया गया। विभिन्न समितियों का गठन किया गया, जिन्होंने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। इन सभी समितियों ने एक सुर में यह सुझाया कि विकास के लिए यह अतिआवश्यक

है कि गांवों को सशक्त किया जाए तथा विकेंद्रीकरण के माध्यम से उन्हें नीति निर्माण में भागीदार बनाया जाए।

आज जब हम पंचायती राज संस्थाओं पर नजर डालते हैं तो पाते हैं, कि आज प्रत्येक गांव, क्षेत्र और जनपदों में पंचायतें अपने विकसित स्वरूप में विद्यमान हैं तथा अपने लिए नीति निर्माण कर रही हैं। कई राज्यों में तो पंचायती राज संस्थाएं इतनी बेहतरीन तरीके से कार्य कर रहीं हैं कि उन्हें 'मॉडल' के रूप में अपनाया जा रहा है, वहीं कुछ राज्यों में स्थितियां इतनी बेहतर नहीं हैं, लेकिन वहां भी सुधार की जरूरत है।

पंचायती राज संस्थाओं ने न केवल ग्रामीण जनता को सशक्त बनाने में मदद की है, बल्कि महिलाओं के लिए एक तिहाई स्थान, तो कहीं-कहीं 50 प्रतिशत स्थान आरक्षित करके उन्हें निर्णय निर्माण की प्रक्रिया में भागीदार बनाने में मदद की है।

वर्तमान में पंचायती राज संस्थाओं के समक्ष क्या चुनौतियां हैं एवं संभावित समाधान क्या हो सकते हैं-

निधियन में अनियमितता – वर्तमान में कई राज्यों में यह देखा जा रहा है कि पंचायतों को आबंटित धन में अनियमितता आ रही है तथा उनको आवश्यकता के अनुरूप बजट उपलब्ध नहीं कराया जा रहा है।

प्रभावी ऑडिटिंग का अभाव – मनरेगा जैसी महात्वाकांक्षी योजना तथा अन्य ग्रामीण विकास पर संकेंद्रित योजनाओं और उनमें प्राप्त हो रही वित्तीय अनियमितता जैसी शिकायतों के बावजूद ऑडिट का कार्य प्रभावी रूप से संपादित नहीं किया जा रहा है।

महिलाओं को परदे में रखना – संवैधानिक प्रावधानों के अनुपालन में पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए स्थान आरक्षित किए गए हैं तथा महिलाएं आज इन पंचायतों के प्रमुख के रूप में कार्य कर रही हैं, लेकिन यह देखने में आता है कि कई जगहों पर महिलाओं को परदे में रखा जाता है तथा उनके घर के पुरुष सदस्य मुख्य भूमिका निभाते हैं। महिलाएं केवल हस्ताक्षर जैसे काम करने के लिए रह गयी हैं। उनका प्रत्यक्ष रूप से गांव के विकास में योगदान नगण्य है।

गांव का विकास अभी भी अपने लक्ष्य के अनुरूप नहीं है – साक्षरता और विशेषज्ञता के अभाव में गांव के विकास के लिए नीतियां प्रभावी रूप से नहीं बन पाती हैं तथा उनका क्रियान्वयन भी नहीं हो पाता, जिससे बहुतायत गांव ऐसे हैं, जहां विकास अपने लक्ष्य के अनुरूप नहीं है।

पढे-लिखे व ईमानदार पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों का आगे न आना- ग्रामीण स्तर की राजनीति में धनबल, जाति एवं धर्म का प्रभाव ज्यादा है, जिसकी वजह से पढे-लिखे व ईमानदार उम्मीदवार चुनावों में प्रतिभाग नहीं करते।

संभावित समाधान क्या हैं –

बजट उपलब्ध कराने में "जैसी जरूरत वैसा प्लान मॉडल" अपनाया जाए, यह जरूरी नहीं कि किसी जनपद में यदि 1000 गांव हो, तो सबके लिए पेयजल सुविधाओं को उपलब्ध कराने के लिए एक समान बजट उपलब्ध कराया जाए। यदि किसी गांव में पेयजल की सुविधा अच्छी है, लेकिन खेल के मैदान उपलब्ध नहीं है, तो वहां खेल के मैदान उपलब्ध कराने के लिए बजट उपलब्ध कराया जाए न कि पेयजल सुविधाओं के लिए अतिरिक्त आबंटन किया जाए।

प्रभावी ऑडिटिंग की व्यवस्था किसी तीसरे पक्ष (थर्ड पार्टी) से कराई जाए, ताकि अनियमितता पर नजर रखी जा सके और सुरसा के मुख की भांति बढ़ रहे भ्रष्टाचार को रोकने के लिए प्रभावी नीतियाँ बनाई जा सकें।

ग्रामीण भारत में महिलाओं को आगे आकर समस्या समाधान का हिस्सा बनाने के लिए यह आवश्यक है कि भारतीय पुरुष महिलाओं को परदे से बाहर निकालने में सहायक की भूमिका निभाएँ, एक नई पहल करें, क्योंकि कई सारे अध्ययन इस बात की तसदीक करते हैं कि महिलाओं में कई सारे कार्य एक साथ और बेहतरीन तरीके से करने की क्षमता (मल्टीटास्किंग एबिलिटी) विद्यमान होती है। इससे ग्रामीण भारत की तस्वीर बदल सकती है।

गांवो के विकास के लिए साक्षरता बढाई जाए तथा नीतियों के निर्माण में प्रत्येक गांव के लिए विशेष रणनीति बनाकर सूक्ष्म प्रबंधन के माध्यम से कार्य किया जाए।

*****

दहेज - एक अभिशाप

अम्बिका द्विवेदी
सहायक, अंतरिक्ष विभाग

दहेज एक ऐसा अभिशाप है, जो सदियों से हमारे समाज को दीमक की तरह खाए जा रहा है। बेटी पैदा होते ही मां-बाप के चेहरे पर एक डर और माथे पर शिकन आ जाती है। वे उसी दिन से उसकी सुरक्षा और शादी के बारे में सोचने लगते हैं। मेहनत-मजदूरी कर के, अपना पेट काटकर एक-एक पैसा जोड़ते हैं। उसकी शादी के लिए पैसा जोड़ते-जोड़ते उसे अपने पैरों पर खड़ा करना भूल जाते हैं।

धीरे-धीरे बेटी बड़ी होती है। घर के हर कार्य में दक्ष और कुशल गृहणी बनने के लिए तैयार होती है। मां-बाप बचपन से ही उसे सिखाते हैं कि बड़ी होकर उसे दूसरे के घर जाना है। उसे पराया धन होने का अहसास हर दिन कराया जाता है। शादी के लिए तैयार करते-करते उसके सपनों को हर दिन मारा जाता है। मां-बाप का भी कोई कुसूर नहीं, क्योंकि वे तो समाज की कुरीतियों के आगे मजबूर होते हैं। फिर आखिर वह दिन आ जाता है, जब बेटी अठारह वर्ष की हो जाती है। मां-बाप उसकी शादी के लिए रिश्ता देखना शुरू कर देते हैं। पर कोई भी पढ़ा-लिखा लड़का उस अनपढ़ लड़की से शादी करने को तैयार नहीं होता। जो, तैयार होता है वह दहेज के लिए मुँह फाड़ता है। आखिर उसने अपने बेटे को पढ़ाया-लिखाया था जो उसे उसकी कीमत दहेज के रूप में वसूलनी थी।

किसी तरह से उसकी शादी एक लड़के से तय होती है। धूम-धाम से शादी होती है। शादी के बाद से उसे दहेज के लिए सताया जाता है। हर दिन ताना मारा जाता है और दहेज के लोभी उसे अपने मायके से और पैसे लाने के लिए कहते हैं। बेचारी लड़की मां-बाप की स्थिति को जानते हुए उफ तक नहीं करती और सब कुछ सहती जाती है।

एक दिन उसके ससुराल वाले इतने क्रोधित होते हैं, कि दहेज के लालच में उस कुशल लड़की को ही जला देते हैं। मां-बाप का रो-रो कर बुरा हाल होता है। एक-एक पैसा जोड़कर बेटी की शादी की। आज न पैसे हैं और ना ही बेटी। काश! उन्होंने वही पैसे उस बेटी को अपने पैरों पर खड़े करने पर खर्च किये होते, तो आज उनकी बेटी दहेज की बलि नहीं चढ़ती।

हम सबको मिलकर इस कहानी से सबक लेना चाहिए। बेटी को बोझ नहीं समझते हुए उसे बचपन से ही पढ़ाना चाहिए। इस प्रकार वह अपने अधिकारों को समझेगी और अपनी लड़ाई खुद लड़ पाएगी और दहेज की बलि चढ़ने से बच जाएगी। इसके अलावा सभी को यह प्रण लेना चाहिए कि ना ही दहेज देंगे और ना ही दहेज लेंगे और समाज की इस कुरीति को जड़ से उखाड़ फेकेंगे।

शहरों में वन

तपन कुमार पांडेय
उच्च श्रेणी लिपिक, अं.वि.

बेंगलूरु जिसे 'बागों का नगर' कहा जाता है, भारत के तमाम शहरों से कई मामलों मे अलग है, लेकिन एक खास मामले में यह शहर अलग स्थान रखता है वह यह है कि यहां पर पेड़-पौधे और बागों की संख्या बहुतायत में हैं, जिसकी वजह से यहाँ का मौसम सुहाना और तापमान नियंत्रित रहता है।

शहरी वानिकी – शहरी निवासियों के लिए उनके पर्यावरणीय और सामाजिक लाभों को सुरक्षित करने के लिए शहरों में पेड़-पौधे, वृक्ष और वनारोपण की अवधारणा शहरी वानिकी कहलाती है।

शहरी वानिकी का महत्व-

1. आज जब शहरीकरण की अनियंत्रित दौड़ चल रही है, तब जगह-जगह कंक्रीट की इमारतें, उनके निर्माण के लिए काटे जा रहे पेड़, उत्पन्न गर्मी की वजह से वातानुकूलन की आवश्यकता को पूरा करने के लिए एयरकंडीशन मशीन का प्रयोग करने की वजह से शहरों में तापमान में वृद्धि हो रही है। तापमान में वृद्धि को कम करने में शहरी वानिकी सहायक होगी।
2. शहरों में अंधाधुंध बढ़ते जा रहे वाहन और उनसे निकलते हानिकारक प्रदूषकों के हानिकारक प्रभाव को कम करने में शहरी वानिकी प्रभावी सिद्ध होगी।
3. भू-जल का स्तर दिन-प्रतिदिन कम होता जा रहा है, जिसकी वजह से सुरक्षित पेयजल आने वाले समय में एक दुर्लभ संसाधन बन जाएगा। वृक्ष भू-जल पुनर्भरण के स्रोत के रूप में कार्य करते हैं, जिससे शहरी आबादी की पेयजल आवश्यकता पूरी हो सकती है।
4. मृदा का स्थिरीकरण करने में भी वन सहायक होते है।
5. शहर की सुदंरता को बढ़ाने में तथा पर्यावरणीय गुणवत्ता को बढ़ाने में इनका योगदान अतुलनीय है। चारों तरफ हरियाली हो, मौसम सुहाना हो तथा स्वच्छ वातावरण हो, तो भला किस इंसान को मनमोहक नही लगेगा।
6. कई सारे अध्ययनों में यह बात सामने आई है कि यदि कुछ वक्त तक प्रकृति की गोद में रहा जाए, तो तनाव प्रबंधन में सहायता मिलती है और शहरी जनजीवन में तनाव एक सामान्य बात हो चली है।

चुनौतियाँ क्या हैं शहरी वानिकी में?

1. पहली चुनौती तो यह है कि भारत के कई सारे शहरों में अनियोजित विकास होता है, जिससे वनारोपण के लिए पर्याप्त जगह ही रिक्त नहीं रखी जाती है। इसकी वजह से भूमि प्रबंधन एक महत्वपूर्ण चुनौती है।
2. शहरी वानिकी एक अत्यधिक लागत वाला कार्य है।
3. शहरी वानिकी में तत्काल लाभ नहीं है।
4. शहरों में भीड़ ज्यादा है और आंधी-तूफान की स्थिती में यदि पेड़-पौधे टूटते हैं, तो जान-माल का नुकसान होने की संभावना होती है।

क्या किया जा सकता है?

1. शहरों में रहने वाले निवासियों, गैर-सरकारी संगठनों, स्वयं-सहायता समूहों को आगे आना चाहिए और शहरों में खाली पड़ी भूमि पर मृदा के अनुकूल पेड़-पौधे लगाने चाहिए। यह केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है कि वह वृक्षारोपण करे। यह आम जनता की भी जिम्मेदारी है।
2. विभिन्न स्कूल, कॉलेजों और अस्पतालों आदि जिनकी परिधि में जगह हो उन्हें वृक्षारोपण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। अस्पतालों में यदि बाग होंगे, तो वे मरीजों और उनकी देखभाल करने वाले लोगों के तनाव को कम करने में सहायक होगें तथा यह मरीजों के स्वास्थ्य में तेजी से सुधार लाने में भी सहायक होगें। यदि स्कूलों में वृक्ष लगाए जाएं, तो पढ़ने वाले प्रत्येक बच्चे को एक वृक्ष की देख-रेख की जिम्मेदारी दी जाए इससे उनमें पर्यावरण के प्रति लगाव उत्पन्न होगा। हमारे जीवन पर बाल समय के बोध का काफी प्रभाव भी पड़ता है। कॉलेजों में वृक्षारोपण और उनकी देखभाल को सह-शैक्षणिक गतिविधियों का हिस्सा बनाया जाए तथा बेहतर प्रदर्शन करने वाले छात्रों को उसके लिए कुछ अतिरिक्त ग्रेड दिए जाएं।
3. एक निश्चित संख्या में पेड़-पौधे लगाने पर शहरी निवासियों को अपने मकान का नक्शा पास कराने के समय शुल्क में कुछ छूट दी जाए।
4. लगाए गए वृक्षों की देखभाल में शहरी निकायों के कार्मिकों की जिम्मेदारी सुनिश्चित की जाए।
5. पेड़-पौधों के न होने से उत्पन्न पर्यावरणीय, सामाजिक तथा आर्थिक हानि की ओर व्यापक ध्यानाकर्षण के लिए जनजागरूकता फैलाई जाए।

*****

पीढ़ियों का टकराव - समन्वय ही समाधान

पद्मा एन.
व. परियोजना सहायक, इसरो मु.

पीढ़ियों के टकराव का पहला कारण विचारों में भिन्नता ही है। दोनों पीढियों को अपना अहम् त्याग करना होगा।

हिंदी में एक प्रचलित कहावत है कि "जहाँ चार बर्तन होते हैं वहाँ आवाज तो होती ही है", लेकिन बात आवाज तक सीमित नहीं है, यह बात बहुत गहरी और दूरगामी परिणाम देने वाली है। अतः इस गंभीर मुद्दे पर विचार करते समय इसके कारण एवं निवारण को जानना जरूरी है।

टकराव के कारणों में निम्नलिखित शामिल हैं –

1) **अहम् का टकराव** – पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी में पहला टकराव अहम् का ही होता है। नई पीढ़ी नई-नई तकनीकों से सुसज्जित रहती है तो पुरानी पीढ़ी अपने अनुभव से भरी रहती है। नई पीढ़ी अपने आपको ज्ञानी मानती हैं तो पुरानी पीढ़ी अपने आपको श्रेष्ठ मानती है। इसकी वजह से ज्ञान और अनुभव का मिलन नहीं हो पाता।
2) **विचारों में भिन्नता** – नए विचारों और आजाद खयालों वाली नई पीढ़ी तथा संकुचित खयालों वाली पुरानी पीढ़ी को अपने विचारों में कटुता नहीं रखनी चाहिए।
3) **जनरेशन गैप** – इन दोनों पीढ़ियों की आपस में मिलने-जुलने में देरी, एक दूसरे को अहंकारी मानना ही टकराव का कारण बनकर जनरेशन गैप बढ़ाती है।
4) **एक-दूसरे में कमी निकालना** – हर इंसान में किसी न किसी रूप में कमी होती है। दोनों पीढ़ियों को इसको समझकर, स्वीकार करके मनुष्य की स्वभावगत आदतों को बदलना होगा, ये दोनों पीढ़ियां रचनात्मक आलोचना कर सकती हैं।

5) **असुरक्षा की भावना** – नई पीढ़ी में नई तकनीक, विचार एवं रफ़्तार होती है, जिस कारण से पुरानी पीढ़ी में असुरक्षा की भावना स्वाभाविक है। जब नई पीढ़ी उन लोगों से सीख कर बढ़ती थी, तब ऐसा नहीं होता था ।

6) **भविष्य की चिंता** – नई पीढ़ी को अपना सपना, साकार करना होता है, परंतु पुरानी पीढ़ी हर समय नई पीढ़ी के कार्यों में रुकावट पैदा करती है। पुरानी पीढ़ी जो करना था, बनना था, वे कर चुके। नई पीढ़ी को बहुत कुछ करना है, इसके लिए नई पीढ़ी को उनके रास्ता में नहीं आना चाहिए।

7) **अनुभव हीनता** – पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी को अनुभवहीन मानती है, तथा हरदम अपने अनुभव का गुणगान करती है। पुरानी पीढ़ी सदैव दूसरो को सलाह देती है, जिससे कुल मिलाकर सामंजस्य बैठाने में परेशानी होती हैं।

8) **समन्वय ही समाधान** – समन्वय से ही हर समस्या का समाधान हो सकता है। इसके लिए जरूरी है कि:-

- **अहंकार से दूर रहा जाए**
- **विचारों का मेल किया जाए**
- **सकारात्मक सोच को अपनाया जाए**
- **सामने वाले का सम्मान किया जाए**
- **आत्म चिंतन किया जाए**
- **आशा की एक किरण के बारे में सोचा जाए**

अंत में हम समाज की दोनों पीढ़ियों से अपेक्षा करेंगे कि अच्छी सोच के साथ नए अवसर तलाशें, न कि टकराव के रास्ते, क्योंकि “जहाँ चाह वहाँ राह” होती है। यह सामाजिक बदलाव इतनी जल्दी नहीं होगा, परंतु समय के साथ एक अच्छा परिवर्तन अवश्य होगा।

समाज से दोनों पीढ़ियों को काम की चीज़ ग्रहण करनी चाहिए और बेकार की चीज का प्रभाव अपने ऊपर नहीं पड़ने देना चाहिए। बदलाव ही प्रकृति का नियम है। नए एवं पुराने के मिलाप से ही समाज को नया रूप दिया जा सकता है।

*****

जिंदगी

अम्बिका द्विवेदी
सहायक, अंतरिक्ष विभाग

इतनी लंबी जिंदगी, पर जीने के कुछ साल हैं।
वही, जो मां के आंचल और पिता के कंधों पर बिताए हैं।।

फिर धीरे-धीरे दुनिया को समझते, और भंवर में फंसते चले जाते हैं।
सब कुछ समझते-समझते, खुद को ही भूल जाते हैं।।

कामयाबी का जुनून, कुछ इस कदर हावी होता है।
सभी रिश्ते-नाते और मां-बाप भी पराए लगने लगते हैं।।

मां-बाप की कीमत तो, मां-बाप बनके ही पता चलती है।
फिर वही रिश्ते-नाते और मां-बाप याद आते हैं।।

कामयाब होकर हम बिल्कुल अकेले रह जाते हैं।
और फिर से वही बचपन याद करते हैं।।

फिर से दिल बच्चा बनने को कहता है, फिर वही नादानियां याद आती हैं।
कंकड़ बटोरते-बटोरते, हम मोती छोड़ जाते हैं।।

और चाहकर भी, कुछ हाथ नहीं आता है।
मां-बाप दुनिया छोड़ चुके होते हैं, और बाकी अपनी दुनिया में लीन होते हैं।।

कहां गया वो बचपन, जब सबको हँस के मिलते थे।
अपने पराए का फर्क ही, कहां पता होता था।।

इतनी लंबी जिंदगी, पर जीने के कुछ साल हैं।
वही, जो मां के आंचल और पिता के कंधों पर बिताए हैं।।

*****

कोशिश

शिबानी पोद्दार
क. वैयक्तिक सहायक, इसरो मु.

कल्पनाओं को रंगने के लिए उसकी रूपरेखा बनानी पड़ती है।
सपनों को साकार करने हेतु सार्थक साहस जुटाना पड़ता है।।

स्थिर होकर, आँखें मूंदे भी सब कुछ पा सकते हैं।
पर इसके लिए भी कठिन तपस्या करनी पड़ती है।।

वृक्ष ऐसे ही फल नहीं देते, उसके लिए भी हाथ बढ़ाना पड़ता है।
केवल नाव के भरोसे नदी पार नहीं होती,
भंवरों में खो न जाए इसके लिए पतवार तो चलानी पड़ती है।।

धनुष खुद से बाण नहीं चलाते, इसके लिए प्रत्यंचा तो खींचनी पड़ती है।
साधन न होने का रोना रोते हो,
बिना रोशनी के भी चाँद कैसे चाँदनी बिखेरता है।।

यूँ ही रास्ते नहीं बनते, एक संकरी पगडंडी हेतु बारम्बार चलना पड़ता है।
इच्छाएँ जायज़ हो तो खुद पर यकीन रखो,
कुछ भी पाने के लिये, योजनाओं पर अमल करना पड़ता है।।

हाथ पर हाथ धरे रहोगे तो पत्ता भी नहीं हिलेगा।
क्योंकि शंख नाद के लिए कम से कम एक श्वास तो फूँकनी पड़ती है।।

*****

जैसी करनी वैसी भरनी

प्रियांका अशोक जाधव
क. वैयक्तिक सहायक, इसरो मु.

'जैसी करनी वैसी भरनी' एक प्रसिद्ध कहावत है। इसका सामान्य अर्थ है, मनुष्य जैसा कर्म करता है, उसी के अनुसार उसे फल भी भोगना पड़ता है।

वास्तव में कर्म तो हम अपनी इच्छा के अनुसार कर सकते हैं, पर अपने कर्मों का फल भोगने के लिये हम विवश होते हैं। अगर हम बबूल के बीज बोएँगें, तो बबूल के काँटे ही हमारे हाथ लगेंगे। बबूल का पेड़ लगाकर, हम आम के मीठे फल खाने की इच्छा करें, तो वह कभी पूरी नहीं होगी।

लगभग सभी लोगों को अच्छे-बुरे का ज्ञान रहता है। लोग जानते हैं कि किस काम का अच्छा फल मिलेगा और किसका बुरा। इसलिए हमें हमेशा ऐसे काम से सदा दूर रहना चाहिए, जिसका नतीजा बुरा हो और चिंता तथा कष्ट बढ़ाने वाला हो।

दुर्योधन अच्छी तरह जानता था कि पांडवों के साथ वह जो छल-कपट कर रहा है, उसका परिणाम बहुत बुरा होगा। गुरुजनों के समझाने-बुझाने का भी उस पर कोई असर नहीं हुआ। अंत में उसके दुष्ट कार्यों के फलस्वरूप कौरवों का विनाश तो हुआ ही, प्राचीन भारत की संस्कृति को भी गहरा आघात पहुँचा।

रावण को अच्छी तरह ज्ञात था कि सीताजी का अपहरण करके वह बहुत ही अनुचित काम कर रहा है लेकिन अपनी शक्ति के घमंड में उसने किसी के विरोध या उपदेश पर कोई ध्यान नहीं दिया। परिणाम यह हुआ कि सोने की लंका जलकर राख हो गई और विभीषण को छोड़कर रावण और उसके संपूर्ण कुल का विनाश हो गया।

जिस प्रकार यह कहावत किसी व्यक्ति के जीवन में सच्ची साबित होती है, उसी प्रकार किसी राष्ट्र या देश के जीवन में भी खरी उतरती है। जर्मनी के तानाशाह हिटलर ने अपने देश को विश्व का सिरमौर बनाने का स्वप्न देखा था। स्वदेश-प्रेम तो उचित ही है, किंतु उसने अपनी इच्छा पूरी करने के लिए बहुत ही अनुचित मार्ग अपनाया। उसने लाखों की संख्या में निरीह यहूदियों का संहार करवा डाला, यूरोप के छोटे-बड़े राष्ट्रों को पराजित कर उन्हें जर्मन साम्राज्य में मिला लिया और द्वितीय विश्व युद्ध की भूमिका तैयार कर दी। उसके दुष्ट कार्यों के फलस्वरूप, लगभग डेढ़ करोड़ नर-नारियों के रक्त से धरती लाल हो गई। अंत में जर्मनी की घोर पराजय हुई और उसके दो टुकड़े हो गए।

अपने अनुचित कार्यों को उचित ठहराने के लिए लोग अक्सर परिस्थितियों की दुहाई दिया करते हैं। वे कहते हैं, हमारे हाथ में तो कुछ भी नहीं है। हम तो परिस्थितियों के गुलाम हैं। जैसी परिस्थितियाँ होती हैं, हम उन्हीं के अनुसार कार्य करते हैं। उनकी यह दलील बिलकुल लचर है और मनुष्य की सामर्थ्य का मखौल उड़ाती है। प्रकृति ने मानव को बुद्धि का वरदान दिया है। उसे कल्पनाशील बनाया है और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान की है। उसमें परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति है। उसे परिस्थितियों के सामने घुटने नहीं टेकने चाहिए, बल्कि उन पर विजय पाने का प्रयत्न करना चाहिए।

हमें इस कहावत को सदा स्मरण रखना चाहिए और किसी प्रकार का अनुचित कार्य करने के पूर्व उसके परिणाम पर विचार कर लेना चाहिए। जिस प्रकार दीपक स्वयं को जलाकर अपने आसपास के वातावरण को प्रकाशित करता रहता है, उसी प्रकार हमें भी अपना तन-मन-धन को मानवता की सेवा में लगा देना चाहिए, ताकि हमारा जीवन सार्थक हो सके।

*****

संपादक मंडल की ओर से

जैसी करनी वैसी भरनी – किसान और दुकानदार की कहानी

एक बार की बात हैं एक गांव में एक किसान था, जो कि दूध से दही व मक्खन बनाकर उसे बेचकर घर चलाता था एक दिन उसकी पत्नी ने उसे मख्खन तैयार कर के दिया। वो उसे बेंचने के लिये अपने गांव से शहर की तरफ रवाना हो गया।

मख्खन गोल-मोल पेड़ों की शक्ल में बना हुआ था और हर पेड़े का वजन एक किलोग्राम था। शहर में किसान ने उस मक्खन को रोज की तरह एक दुकानदार को बेच दिया, और दुकानदार से चायपत्ती, चीनी, तेल और साबुन आदि खरीदकर वापस अपने गांव जाने के लिये रवाना हो गया। उस किसान के जाने के बाद उस दुकानदार ने मक्खन को फ्रीज में रखना शुरू किया और उसे अचानक खयाल आया कि क्यों ना इनमें से एक पेड़े का वजन चेक किया जाए, वजन तोलने पर पेड़ा सिर्फ 900 ग्राम का निकला। हैरत और निराशा से उसने सारे पेड़े तोल डाले मगर किसान के लाए हुए सभी पेड़े 900-900 ग्राम के ही निकले।

दुकानदार ने किसान से चिल्लाते हुए कहा – तू यहाँ से चला जा, ऐसी बेईमानी, किसी बेईमान और धोखेबाज इंसान से करना, मुझसे नहीं। 900 ग्राम मख्खन को पूरा एक किलो कह-कर बेचने वाले शख्स की मैं शक्ल भी देखना नहीं चाहता। ठीक अगले हफ्ते फिर किसान हमेशा की तरह मक्खन लेकर जैसे ही दुकानदार की दुकान पर पहुँचा किसान ने बड़ी ही विनम्रता से दुकानदार से कहा "मेरे भाई मुझसे गुस्सा न हो हम तो गरीब लोग हैं, हमारे पास सामान तोलने के लिए वजन (बाट) खरीदने की हैसियत कहां"? आपसे जो एक किलो चीनी लेकर जाता हूँ उसी को तराजू के एक पलड़े मे रख-कर दूसरे पलड़े मे उतने ही वजन का मक्खन तोलकर ले आता हूँ।

Moral (सीख): जो हम दूसरों को देंगे, वही लौट कर आयेगा...
फिर चाहे वो इज्जत, सम्मान हो, या फिर धोखा !!!
हम जो देतें हैं, बदले में हमें वही मिलता है। यही इस संसार का नियम है।

महिला क्लब बैठक

डॉ. पी. के. जैन
सह निदेशक, सैटकॉम परियोजना कार्यालय, इसरो मु.

पात्र

श्रीमती गुप्ता – अध्यक्ष
श्रीमती सक्सेना – सचिव
श्रीमती जोशी
श्रीमती लाल
श्रीमती कपूर

श्रीमती सक्सेना: (घड़ी देखती हुई प्रवेश करती हैं) ओह माय गॉड! यहाँ तो अभी तक कोई नहीं पहुँचा, मैं तो समझ रही थी, मैं ही लेट हो गई। अब बैठकर सबका इंतजार करो, (ठंडी सांस लेती हुई) मैं तो सोच रही हूँ, इस बार सचिव के पद से त्यागपत्र ही दे दूँ। देर से आओ तो मुसीबत, जल्दी आओ तो मुसीबत।

श्रीमती जोशी: (मुस्कुराते हुए प्रवेश करती हैं) हेलो! श्रीमती सक्सेना, ये अकेले में किस पर अपने गुस्से का कहर ढ़ा रही हैं, लगता है काफी देर से अकेली बैठी हैं।

श्रीमती सक्सेना: ओह नहीं! वो तो मैं बस यूँ ही, ... कितनी गर्मी है न आज।

श्रीमती जोशी: लगता है इसीलिए आपका मूड भी कुछ गरम है।

श्रीमती सक्सेना: हो भी क्यों न! अब देखिए निर्धारित समय से आधा घंटा ऊपर हो गया, अभी तक कोई नहीं आया। (तभी श्रीमती लाल प्रवेश करती हैं आँचल संभालती हुई)

श्रीमती लाल: हेलो! श्रीमती सक्सेना, श्रीमती जोशी! आज तो श्रीमती जोशी, बहुत जल्दी आ गईं, पिछली बैठक में तो आप शायद तब आई थीं जब बैठक खत्म होने वाली थी।

श्रीमती जोशी: (झेंपते हुए) जी, वो! हाँ मैंने बताया था न, हमारे घर कुछ मेहमान आ गए थे, वो स्टेट्स में मेरी बहन है न, उसने उनके हाथ कुछ तोहफा भेजा था... पर आज आप खुद कहाँ रह गईं! हमेशा तो आप ही सबसे पहले पेश होती हैं,

श्रीमती लाल: अरे वाह! थोड़ा सा इंतजार का स्वाद आप भी तो चखिए।

(श्रीमती सक्सेना इस बीच कुछ दस्तावेज देख रही हैं)

श्रीमती लाल: (श्रीमती सक्सेना से) आप कुछ व्यस्त नजर आ रही हैं।

श्रीमती सक्सेना: (कुछ परेशान सी) जी मैं, आज की बैठक के विषय, समाज में नारी के हकों की रक्षा पर काफी सामग्री लाई हूँ, उसी को व्यवस्थित कर रही हूँ।

(इसी बीच, श्रीमती कपूर, इठलाती, बाल सेट करती हुई आती हैं)

श्रीमती कपूर: हाय एवरीबडी, मैं लेट तो नहीं हूँ न।

श्रीमती जोशी: (व्यंगात्मक स्वर में) जी नहीं, आप अध्यक्ष से काफी पहले समय पर आई हैं।

श्रीमती कपूर: (बैठते हुए) अरे! मैं तो आज लेट हो ही जाती! यू नो, आज मेरे बेटे के स्कूल में पेरेंट्स – टीचर्स मीटिंग थी। आप तो जानती ही हैं वो स्पोर्ट्स चैंपियन है। हर खेल में चैंपियन है। क्रिकेट टीम का कैप्टन है, बैडमिंटन चैंपियन है, क्षेत्रीय स्तर पर टेनिस खेल चुका है, और एथलेटिक्स में तो उसका वर्चस्व है ही, सभी टीचर्स मुझसे उसकी तारीफें ही किए जा रहे थे।

श्रीमती जोशी: (धीरे से) जो बच्चे पढ़ाई में ज़ीरो होते हैं, वे ही खेल में हीरो होते हैं। अब मेरा सोनू हमेशा ही क्लास में प्रथम आता है, और किसी चीज़ से उसे कोई मतलब नहीं है, देखना, वो आई.ए.एस. बनेगा।

श्रीमती कपूर: (तुनक कर) एक्सक्यूज़ मी! श्रीमती जोशी आप कहना क्या चाहती हैं ?

श्रीमती सक्सेना: (बात को संभालते हुए) देखिए, मेरा ख्याल है, बच्चों के भविष्य पर हम बाद में चर्चा कर सकते हैं। फिलहाल, हम आज बैठक में 'नारी के हकों की रक्षा' के बारे में बातचीत करेंगे।

श्रीमती लाल: लेकिन श्रीमती गुप्ता तो अभी तक नहीं आई। एक घंटा ऊपर होने वाला है, अध्यक्ष होने के नाते वो हमेशा ही लेट आती हैं।

(तभी, श्रीमती गुप्ता का प्रवेश होता है)

श्रीमती गुप्ता: (मुस्कुराते हुए) हेलो! लगता है आज सभी आ गईं। अच्छा है, हम बैठक समय से शुरू कर सकते हैं (बैठते हुए)। हाँ तो आपको याद होगा, पिछली बैठक में हमने बताया था कि आज का चर्चा का विषय होगा 'समाज में नारी के हकों की रक्षा'। श्रीमती सक्सेना, आप कुछ मैटर लाई हैं? अरे, श्रीमती शर्मा नहीं आई, वे तो आज नारी कल्याण के ऊपर कुछ रशियन पुस्तकें लाने वाली थीं।

श्रीमती लाल: (कुछ हंसते हुए) गई होंगी, कहीं साड़ियों की सेल में।

श्रीमती कपूर: सेल! अरे कहाँ लगी है?

श्रीमती गुप्ता: साड़ियों की सेल! वहाँ तो छंटी हुई और सेकेंड हैंड साडियाँ ही होती हैं। भई मैं तो हमेशा शोरूम से ही खरीदती हूँ। अब देखिए, यही साड़ी, मिल सकता है ऐसा मटेरियल सेल में!

श्रीमती जोशी: वाकई श्रीमती गुप्ता! आपकी साड़ी तो बहुत ही सुंदर लग रही है। कहाँ से ली आपने?

श्रीमती गुप्ता: ये तो पिछले महीने जब हम बॉम्बे गए थे वहाँ से ली थी, पूरे 5000/- की है। वास्तव में, ये इस सेट के साथ और खूबसूरत लगती है।

श्रीमती कपूर: अमेरिकन डायमंड है न! पिछले महीने, हमारी शादी की सालगिरह पर मेरे पति ने मुझे भी एक अमेरिकन डायमंड का सेट उपहार में दिया था।

श्रीमती सक्सेना: वाओ! श्रीमती कपूर! और आप लोग अंदाजा लगाइए कि मेरे पति ने शादी की सालगिरह पर क्या तोहफा दिया?

श्रीमती गुप्ता: क्या? श्रीमती सक्सेना?

श्रीमती सक्सेना: एक नौकर!

सभी : नौकर !

श्रीमती सक्सेना: जी हाँ नौकर! अब आजकल इन नौकरानियों के दिमाग तो सातवें आसमान पर चढ़ रहे हैं, काम इतना कम और इतना गंदा करती हैं कि बस कुछ पूछो मत। कुछ कहो तो काम छोड़ने की धमकी देती हैं। आप जानती हैं न कि मैं कितना व्यस्त रहती हूँ, कभी लेडिज़ क्लब मीटिंग, कभी किट्टी पार्टीज़, कभी ताश खेलना और कभी क्या-क्या। तो मेरी समस्या देखकर मेरे पति ने एक 12-13 साल के लड़के की व्यवस्था नौकर के रूप में कर दी है।

श्रीमती जोशी: हाय! श्री सक्सेना से कह कर एक नौकर मुझे भी दिलवा दीजिए, प्लीज़! वैसे भी आजकल मेरी नौकरानी की सिल्वर जुबली चल रही है।

श्रीमती लाल: क्या उसने आपके यहाँ 25 दिन पूरे कर लिए?

श्रीमती जोशी: जी नहीं, 3 महीने में वह मेरी 25वीं नौकरानी है।

(सभी हँसती हैं।)

श्रीमती लाल: भई! इम तो इस नौकरानी के चक्कर में पड़ते ही नहीं, मेरी सास काफी काम करती रहती है। यू सी, व्यस्त तो मैं भी बहुत रहती हूँ न! अब आम का मौसम आ गया, और मुझे अपनी सास से अचार डलवाना है।

श्रीमती कपूर: ओह हाँ! श्रीमती लाल, आपके घर का अचार तो बहुत स्वादिष्ट बनता है। अपनी सास से मेरे लिए इसकी रेसेपी ले आइए न। मैं भी अपनी सास से डलवाऊँगी।

श्रीमती लाल: (मुँह बिचका कर) ऊंह! वो क्या बताएंगी। मैंने ही तो उन्हें बताई है। वैसे मैंने कुछ अचारों की रेसेपी फेमिना में छपने के लिए भेजी भी हैं।

श्रीमती गुप्ता: रियली! श्रीमती लाल!

श्रीमती जोशी: (घड़ी देखते हुए) अरे 5 बज गए! प्लीज़ एक्सक्यूज़ मी! आजकल मेरे जीजाजी आए हुए हैं न, वो हमें सिल्वेस्टर स्टैलॉन की रॉकी-V दिखाने ले जा रहे हैं।

श्रीमती सक्सेना: सिल्वेस्टर स्टैलॉन! हाय! कितना हैंडसम है। मैं तो उसकी जबरदस्त फैन हूँ। वैसे हॉलीवुड स्टार्स तो होते ही हैं, इतने आकर्षक! बताइए कौन सा भारतीय हीरो उसकी पर्सनालिटी का मुकाबला कर सकता है?

श्रीमती कपूर: ऐसा तो नहीं है, श्रीमती सक्सेना। क्या आप देव-आनंद को भूल गईं? अरे हम तो कॉलेज की कक्षाएँ बंक करके उसकी फिल्में देखते थे। 'तीन देवियाँ' तो मैंने 5 बार देखी और 'गाइड' जैसी फिल्म तो बनी ही नहीं।

श्रीमती गुप्ता: अब भई ये तो अपनी-अपनी पसंद है। अच्छा अब आज तो काफी चर्चा हो गई है। मेरा ख्याल है अब बैठक बर्खास्त करें। अगली बैठक जो कि अगले बुधवार को यहीं होगी, उसका विषय भी आज की तरह एक बहुत ही सीरियस प्रॉब्लम होगी। विषय रहेगा – 'गरीबी में पले बच्चों का भविष्य क्या है' मुझे लगता है इस विषय पर आप सभी चर्चा के लिए तैयार रहेंगी। श्रीमती सक्सेना आप श्रीमती शर्मा को भी सूचित कर दीजिएगा और हाँ, अगली बैठक में आप सभी प्लीज़ समय से आइएगा, ताकि बैठक वक्त से शुरू हो सके। किसी को कोई आपत्ति तो नहीं है न?

सभी: जी नहीं।

श्रीमती गुप्ता: तो फिर अगली बैठक तक अलविदा। आज तो काफी सीरियस चर्चा के कारण थकान हो गई। श्रीमती सक्सेना आपने स्नैक्स फंड में से कोल्ड ड्रिंक का इंतजाम तो किया होगा न?

श्रीमती सक्सेना: जी हाँ। आइसक्रीम का भी। चलिए, चलें।

(सभी उठने को तत्पर, पर्दा गिरता है)

*****

हमारा प्यारा भारत

सूरज सोहेल सिंह
वरिष्ठ सहायक, इसरो मु.

हमारी आज़ादी हजारों स्वतंत्रता-सेनानियों के प्रयासों और बलिदानों से मिली है। हम महात्मा गांधी, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर, सरदार बल्लभ भाई पटेल, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह और ऐसे ही अनेक स्वप्नदृष्टा महापुरुषों के आभारी हैं, जिन्होंने इस राष्ट्र के निर्माण के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया, जो आज 1.3 अरब नागरिकों की आशाओं, अपेक्षाओं और सपनों पर टिका हुआ है। नीतिगत पहल, नियोजन और कारगर कार्यान्वयन के जरिये देशवासियों को नई राहें और अवसर प्रदान कर "न्यू इंडिया" के निर्माणों को बदला जा सकता है। चूँकि आज भारत एक व्यापक बदलाव के दौर से गुजर रहा है, राष्ट्र का यह नव-निर्माण आत्मनिर्भर भारत, सबका साथ - सबका विकास - सबका विश्वास, डिजिटल इंडिया और ऐसे ही अनेक स्तंभों पर टिका होगा। इस गौरवमयी यात्रा के जयगान के रूप में आशा है कि भारत ने एक नए दशक में प्रवेश किया है।

आशा है कि पिछले वर्ष की महामारी के घाव इस वर्ष भर सकेंगे और यह वर्ष भारत को सही अवसर प्रदान करेगा कि वह क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर नई नीतियों और कार्य-प्रणालियों का नेतृत्व करे। हम आशा करते हैं कि यह वर्ष हमें मेक इन इंडिया, इन्वेस्ट इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, जैसे कार्यक्रमों तथा व्यापार में सुगमता और बेहतर बुनियादी

सुविधाओं के जरिये ब्रांड इंडिया को शानदार बनाने में मदद करे। हम अपने स्थानीय उत्पादों और कौशल का प्रचार-प्रसार कर, साथ ही भारत की आध्यात्मिक-सांस्कृतिक धरोहरों, योग, सांस्कृतिक पर्यटन इत्यादि को विश्व–पटल पर स्थापित कर "वोकल फॉर लोकल" अभियान को आगे बढ़ा सकें। किसी भी प्रयास की सफलता के लिए जन-भागीदारी अनिवार्य है। स्वच्छ भारत अभियान इनका ज्वलंत उदाहरण है कि कैसे एक सरकारी पहल विशाल जन आंदोलन का रूप ले सकती है।

निश्चय ही हमारी भावी पीढ़ियों का भारत आज से भिन्न होगा। हमारा दायित्व है कि हम उन्हें ऐसा भारत सौंपे जिस पर वे गर्व कर सकें। ऐसा भारत जिसमें आधुनिकता और परंपरा, बुनियादी साधनों और सेवाओं, प्रगति और अवसरों, विकास और टिकाऊपन, आत्म-निर्भरता और वैश्विकता तथा श्रेष्ठ भावबोध और बौद्धिक विवेक का सुंदर समावेश हो।

जय हिंद, जय भारत !

*****

भारत में सर्वप्रथम

संपादक मंडल की ओर से

- रवींद्रनाथ टैगोर साहित्य के क्षेत्र में भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता हैं।
- चक्रवर्ती राजगोपालाचारी स्वतंत्र भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल थे।
- दादाभाई नौरोजी ब्रिटिश संसद का सदस्य बनने वाले प्रथम भारतीय नागरिक थे।
- मिहिर सेन इंग्लिश चैनल को पार करने वाले प्रथम भारतीय नागरिक थे।
- सुचेता कृपलानी भारत में प्रथम महिला मुख्यमंत्री थी।

बाढ़ और मगरमच्छ

गुरु प्रसाद यादव
क. अनुवाद अधिकारी, इसरो मु.

पूरे सप्ताह बारिश हुई। पूरा इलाका जलमग्न हो गया था। खेत डूबे-डूबे नजर आते थे। धान के हरे-भरे लहलहाते खेत पानी से ढक गए थे। कितने ही पुराने मकान और पेड़ गिर गए। मौसम अभी भी साफ नहीं हुआ था। रह-रहकर बारिश हो जाती थी। गनीमत थी कि गांव में पानी नहीं घुसा था। लेकिन लोग डरे थे कि बारिश यूँ ही होती रही तो गांव भी डूब सकता था। आफत चाहे जितनी भी हो, बाल मन तो क्रीड़ातुर ही रहता है। इस प्रलय जैसे मंजर में भी लड़कों के पास खेलने की तरह-तरह की योजनाएं थी। कहीं पानी में कागज की नावें उतार दी गई थीं, तो कहीं कमर भर पानी में घुसने-निकलने का करतब दिखाया जा रहा था।

विजय और गोलू साहसिक कार्यों के शौकीन थे। दोनों हमउम्र थे और नौवीं कक्षा में दाखिल हुए थे। गांव से थोड़ी ही दूर पर एक ताल था, जो अपने उफान पर था। ताल के पानी से आस-पास के सभी खेत डूब गए थे। यहाँ तक कि एक एकड़ में फैला आमों का बगीचा भी मानों ताल में ही समा जाना चाहता था। ताल के ऊपर एक छोटी पुलिया थी, जिससे ताल के दूसरी तरफ के गांव वाले ताल को पार किया करते थे। कुछ लोग पानी से खतरनाक जानवरों के बह आने की बात करते थे। गांव के बुजुर्ग बातों-बातों में अक्सर ऐसी कहानियाँ बताते, जब उन्हें मगरमच्छ तथा अजगर जैसे जीव ताल के पानी से बह आए दिखे थे। कुछ को ऐसी बातें बेहद डरावनी लग सकती हैं, तो कुछ को रोमांचकारी। विजय और गोलू को इसमें रोमांच नजर आया। वे उस खतरे की कल्पना नहीं कर सके जो ऐसे जीवों के संपर्क में आने से हो सकता था।

दोनों दोस्त बारिश के रुकने का इंतजार करने लगे। एक दो दिन में बादल पतले होने लगे और धूप हल्की-हल्की आँख-मिचौली करने लगी। बारिश इतनी अधिक हुई थी और बाढ़ का पानी भी इतना अधिक था कि एकाध पखवाड़ा हालात वैसे ही रहने वाले थे। मौका देखकर दोनों बालक ताल की तरफ निकल पड़े। उस दिन दोपहर के बाद बारिश बिल्कुल रुक गई थी। खेतों की मेढ़ों से दोनों परिचित थे। फिर भी पानी कहीं जांघों तक और कहीं कमर तक आता था। जिन खेतों में वे कभी सरपट भाग जाते थे, वे ऐसे जलमग्न थे कि उनमें पांव रखना भी कुँए में उतरने जैसा लगता। अपने पैरों से ही मेढ़ों को टटोलते हुए वे आगे बढ़ रहे

थे। पानी की लहरें उन्हें हिला देती। कुछ जगहों पर पानी कमर से ऊपर भी आ जाता और उन्हें अपनी छाती पर पानी का दबाव महसूस होता। आम का बगीचा ऐसा प्रतीत होता जैसे किसी समुद्र में पेड़ों वाला एक छोटा द्वीप हो।

मगरमच्छ देखने के कौतूहल ने उनमें अपार साहस भर दिया था। हालाँकि, मगरमच्छ पिंजड़े में बंद नहीं था। ताल तक पहुँचने के लिए उन्हें बगीचे को पार करना था, और वे बगीचे से कुछ पांच सौ मीटर की दूरी पर थे। दोनों संभल कर चलने में एक-दूसरे से बातचीत भी नहीं कर रहे थे। गोलू ने रोमांच को और बढ़ाने के लिए कल्पना का सहारा लिया। उसने कहा, "विजय, क्या होगा यदि हमें मगरमच्छ दिख जाए?" विजय ने इस बारे में सोचा ही नहीं था। वह बस यूँ चले जा रहा था जैसे कि मगरमच्छ उन्हें दर्शन देने के लिए ही आएगा। गोलू के सवाल पर वह किंचित विचलित नहीं हुआ। उसने कहा "क्या होगा हम देखेंगे और चले आएंगे। फिर सबको बताएंगे।" दोनों मित्र मगरमच्छ को उतना ही साधारण और मामूली समझ रहे थे जितना कि वह उन्हें किताबों के पन्नों पर बने चित्रों में दिखता था। ना जाने क्यूँ वे मगरमच्छ को सुस्त प्राणी समझते थे? और उसे वे किसी बड़े मेंढ़क की तरह ही देखते थे, जिसे लकड़ी आदि से छेड़कर यहाँ से वहाँ कुदाया जा सकता था।

एकदम निर्भीक और निश्चिंत, वे बगीचे की तरफ बढ़ते गए। बगीचे के चारों तरफ ऊँची मेढ़ थी, जो पानी में डूबी हुई थी। केवल कहीं-कहीं ही वह किसी पतली कतार सी नजर आती। मेढ़ की वजह से बगीचे के अंदर पानी का स्तर अधिक था। पानी से भरे बगीचे को पार करना उनकी कद-काठी के लिए मुश्किल था। दोनों बगीचे से कुछ दूरी पर खड़े होकर आगे की कठिनाई को देख भर रहे थे। "अब क्या करें?", विजय ने पूछा। गोलू इतनी दूर आकर निराश नहीं लौटना चाहता था। पीछे मुड़कर देखने पर उन्हें ऐसा लगता मानों एक नदी पार करनी हो। मगरमच्छ देखने के उत्साह ने उनमें ऐसा प्राण भर दिया था कि वे तमाम जलमग्न खेत पार करके यहाँ तक चले आए। लेकिन अब खाली हाथ लौटना उन्हें थकाऊ लगा। "क्या बगीचे को पार नहीं कर सकते?" गोलू ने पूछा। "लेकिन कैसे?" उसके दोस्त ने कहा। "कठिनाई तो है। लेकिन बगीचे के मेढ़ तक चलकर देखते हैं। बगीचे में पानी थोड़े ही ज्यादा होगा।" गोलू ने सुझाया।

बगीचे के पास पानी उनकी छाती तक आ गया, फिर भी पेड़ों की लटकी शाखाओं का सहारा लेकर वे बगीचे की मेढ़ पर चढ़ गए। पानी से भींगे पेड़ काले-काले दिखते थे। आसमान में बादल फिर से छा गए और सूरज बादलों के उस पार छिप गया। बगीचे में सन्नाटा पसरा था। पक्षी भी मानो छिपे हुए थे और ऐसे मौसम में बाहर निकलना नहीं चाहते थे। बगीचे की

उत्तरी मेढ़ पर खड़े दोनों लड़के विचार शून्य स्थिति में थे। मन में थोड़ा भय भी था और मगरमच्छ देखने की प्रबल लालसा भी। तभी दक्षिणी छोर पर पानी में कुछ गिरने की आवाज आई। चौंककर दोनों एक-दूसरे की तरफ देखने लगे। उन्होंने मन ही मन सोचा, 'क्या मगरमच्छ मेढ़कों की तरह कूदते हैं? डरने की बजाय उनकी उत्सुकता और बढ़ गई। यह बालक मन ही हो सकता है जो इतना निर्भीक हो जाए। गोलू ने उत्साहित होकर कहा, "मेढ़ के साथ-साथ चलते हैं। मगरमच्छ शायद दक्षिण की ओर है।" विजय भी उतना ही उत्साहित था। लेकिन बगीचे की मेढ़ पर फिसलन थी और वह इतनी चौड़ी भी नहीं थी जिस पर आसानी से चला जा सके। और ऊँची मेढ़ों की वजह से बगीचे में एकत्रित पानी उन्हें डुबोने के लिए काफी था। फिर भी वे पेड़ों की शाखाओं और उनके तनों का सहारा लेकर धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे।

मगरमच्छ की सिर्फ बातें ही थीं। पहले गांव के किसी भी व्यक्ति ने बाढ़ में मगरमच्छ को आए नहीं देखा था। लेकिन ऐसी कहानियों ने उन बाल मनों को इतना उत्सुक बना दिया था कि वे मगरमच्छ का पूरे मन से आह्वान कर रहे थे। उन्हें यह किंचित भय न था कि मगरमच्छ उनके लिए जानलेवा हो सकता था, कि उसके मजबूत जबड़े उनकी हड्डियों को चबा कर चूरा कर सकते थे। वे अगर शहर से होते तो टेलीविजन आदि के माध्यम से मगरमच्छ की खूंखार प्रकृति को समझ पाते। लेकिन जो कहानियाँ उन्होंने गांव के ढ़पोल गुरुओं से सुनी थी, उनमें मगरमच्छों को कमतर करके बताया गया था। जैसे कि उन्होंने मगरमच्छ को डाँट-डपट कर भगा दिया, कि लट्ठ दिखाकर डरा दिया आदि-आदि।

यह संयोग ही था कि उनका उस दिन पानी में मगरमच्छ देखने आना व्यर्थ नहीं हुआ। जो बातें उनके गांव के लोग सिर्फ किया करते थे, और जिनका वास्तविकता से कोई संबंध नहीं था, उन्हें वे दोनों लड़के चरितार्थ करने वाले थे।

उस बरसात, पूरे प्रदेश में भारी बारिश हुई थी। हर जगह नदी, नहर, ताल-तल्लैयों में बाढ़ थी। बड़ी-बड़ी मछलियाँ, विशालकाय सर्प और सरीसृप पानी में बहकर यहाँ-वहाँ पहुँच गए थे। दुर्भाग्य से गोलू और विजय की मुलाकात ताल के पानी में बह आए एक विशाल मगरमच्छ से होनी थी। ताल में पानी का बहाव अधिक था। इसलिए वह काला, साढ़े छः फीट लंबा मगरमच्छ बहाव से तैरकर दूर किनारे की तरफ आ गया था। बगीचे के दक्षिणी मेढ़ से तीन सौ मीटर पर ही ताल का केंद्र था, लेकिन बाढ़ के कारण वह बगीचे की दक्षिणी मेढ़ तक उसी प्रचण्डता में हिलकोरे मार रहा था। बगीचे के कई पेड़ों को लहरों ने धराशायी कर दिया था। दक्षिणी मेढ़ पर एक पुराना पीपल का पेड़ था, जिसकी कुछ मोटी शाखाएं जमीन से चार फीट ऊँचाई पर समानांतर फैली थी। अब उन शाखाओं तक भी पानी पहुँच रहा था।

मगरमच्छ पीपल की उन्हीं शाखाओं के पास था। कुछ देर पहले उसने किसी शिकार पर झपट्टा मारा था, जिसकी आवाज दोनों किशोरों ने सुनी थी। मगरमच्छ और उन कौतूहलग्रस्त लड़कों के बीच बगीचे की चौड़ाई जितना फासला था।

2

शाम के चार बजने वाले थे। आसमान में बादल घने हो आए और अभी से ऐसा लगता मानो संध्या हो गई है। बारिश होने की संभावना देख गोलू के घर उसकी खबर ली जाने लगी। उसकी बड़ी बहन गीता पड़ोस के घरों में जा-जाकर पूछ रही थी। लेकिन किसी ने गोलू के उनके यहाँ आने के बारे में नहीं बताया। अंधेरा हो जाने से पहले वह उसे घर बुला लाना चाहती थी। आखिरकार, उसने विजय के घर का रुख किया। विजय का घर गांव के पूर्वी छोर पर था। वहाँ पहुँचकर भी गोलू का पता न चल सका। अलबत्ता, विजय के भी घर पर न होने की खबर मिली। अक्सर दोनों साथ ही खेला करते थे। गांव के चारों तरफ तो पानी भरा था। आखिर दोनों कहाँ जा सकते थे। सोच-सोचकर गोलू की बहन परेशान हो रही थी। विजय के पिता विभूति भी उसके साथ हो लिए। वे पड़ोसियों से बच्चों को कहीं जाते देखने के बारे में पूछने लगे। चलते-चलते वे गांव के बाहर दक्षिण की तरफ आ गए, जहाँ से दूर-दूर तक पानी फैला नजर आता था। दोनों अभिभावक बच्चों के न मिलने से चिंतित हो रहे थे। दक्षिण की ओर बगीचा किसी विशालकाय दैत्य के काले बालों की तरह प्रतीत होता। यूँ ही विभूति के मन में आया कि क्या वे बगीचे में तो नहीं चले गए? फिर अपने इस विचार को खुद ही खारिज कर दिया। पास ही में चंदर का घर था। उसकी पत्नी दरवाजे पर दिया रखने आई। गीता को इस वक्त वहाँ देख उसे थोड़ा संदेह हुआ। घर से बाहर निकल उसने गीता से पूछा "क्या हुआ गीता, आज शाम इधर कैसे आना हुआ? सब ठीक तो है?" गीता ने लड़कों के बारे में पूछा तो चंदर की पत्नी कुछ याद करती सी बोली, "ठीक तो नहीं बता सकती, लेकिन दोपहर को दो लड़कों को बगीचे की तरफ जाते देखा था। हमें लगा ताल पार गांव के होंगे।" विभूति का माथा ठनका। कुछ ही पल पहले उसे यही विचार तो आया था। उसने चंदर को आवाज दी और साथ चलने को कहा। गांव के कुछ और लोग भी बुला लिए गए।

धुँधलका होने लगा। लेकिन बगीचे में अंधेरा फैल चुका था। दोनों लड़के बगीचे की मेढ़ पर चलते-चलते दक्षिणी मेढ़ तक पहुँच गए। हालांकि, अंधेरा होने से गोलू का मगरमच्छ देखने का उत्साह कमजोर पड़ने लगा। "विजय, घर लौट चलें क्या? अंधेरा हो रहा है। घर कैसे जाएंगे?" डरती आवाज में उसने विजय से पूछा। विजय भीरु प्रकृति का नहीं था। अंधेरे से उसे परेशानी तो हो रही थी लेकिन उसे साहसिक कार्यों के अनेक अनुभव थे। वह इस बगीचे के

चप्पे-चप्पे से परिचित था। गर्मी के दिनों में वह देर शाम तक इसी बगीचे में अकेले रह जाता था। उसे चुनौतियों को गले लगाने का जुनून था। आगे आने वाले खतरे से डरने के बजाय वह उस रोमांच के बारे में सोच रहा था, जो मगरमच्छ को देखने से होने वाला था। जबकि उसे यह तनिक भी आभास नहीं था, कि वहाँ मगरमच्छ के बजाय कोई विषैला सर्प भी हो सकता था। उसके कोरे मस्तिष्क पर मगरमच्छ की रोमांचक कहानी अंकित थी।

मगरमच्छ ने अपने समीप की आहट को भांप लिया। वह उसी दिशा में बहुत धीरे-धीरे शिकारी के तेवर में बढ़ने लगा। दक्षिणी मेढ़ पर कई वृक्ष गिरे थे। खतरे से बिल्कुल अनजान दोनों किशोर मेढ़ पर गिरे वृक्षों के तनों और डालियों पर चढ़कर आगे बढ़ रहे थे। शिकार को अपनी रेंज में पाकर मगरमच्छ ने एक जोरदार झपट्टा मारा। आगे चल रहा विजय उसके जबड़े से टकराकर छिटक गया। भय और आश्चर्य से दोनों की चीख निकल गई। विजय एक वृक्ष की पतली शाखा को पकड़कर झूल रहा था। गोलू पास के मोटे तने से लिपट गया। डर की वजह से उसकी आवाज उसके गले में ही अटक गई।

मगरमच्छ का निशाना चूक गया था। घड़-घड़ की आवाज करता वह बगीचे में घुस गया। पानी की एक बड़ी लहर बगीचे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक वलय में फैलती गई। पूरे बगीचे में मानो डर की तरंग दौड़ गई हो। खौफजदा गोलू का शरीर अकड़ गया। वह अपना शरीर हिला-डुला सकने की भी स्थिति में नहीं था। विजय अभी भी उस पतली टहनी से झूल रहा था। लेकिन उसमें साहस शेष था। कालरूपी वह सरीसृप विजय की तरफ दोबारा मुड़ा। पानी को चीरते हुए वह उसकी तरफ तेजी से बढ़ रहा था। जबकि गोलू अपनी जगह से उस खूंखार जानवर के पैंतरे को देख रहा था। अचानक उसके शरीर में जान आई। उसके कंठ बोल सकने में समर्थ हुए। डर से सुन्न पड़े शरीर में रक्त संचार हो उठा। अपनी पूरी ताकत लगाकर वह चीखा, "विजय! ऊपर चढ़ जा। मगरमच्छ तुम्हारी तरफ आ रहा है।" फिर वह स्वयं उस तने पर चढ़ गया, जिस पर वह चिपका हुआ था। "इधर, इधर...इधर आ...", वह मगरमच्छ का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करने का प्रयास करने लगा। यह स्तब्ध करने वाली घटना थी। मुर्दा पड़ चुकी उसकी शरीर में ना केवल स्फूर्ति आ गई थी, बल्कि वह अपने साथी को बचाने के लिए अदम्य साहस का परिचय भी देने लगा। वह लगातार चीखे जा रहा था - इधर आ...मगरमच्छ, इधर आ...यहाँ...इधर... हू...हू...हू...

आपातकालीन समय में शरीर और मन में ऊर्जा का अक्षय संचार होने लगता है। प्राणों को संकट में पाकर प्राणी कुछ भी कर सकता है। वह अपने रोम-रोम में बसे प्राण को जगा लेता है, उसे इकट्ठा कर लेता है और उस दिशा में झोंक देता है, जहाँ वह एक अभेद्य किले की तरह

खड़ी हो जाए और विपरीत परिस्थितियों का सामना कर सके। विजय का पूरा शरीर उस प्राण ऊर्जा को जगा रहा था। अपने मित्र की उस चीत्कार से जिसमें अपूर्व स्नेह, चिंता और साहस भरा हुआ था, उसकी बाजुओं में नवीन शक्ति का संचार हो चला। शिकार अपने को बचाने का जितना प्रयास कर सकता है, वह शिकारी द्वारा शिकार किये जाने के प्रयास से सर्वदा अधिक और प्रभावी होता है। विजय ने अपने पैर मोड़कर पंजों से भी टहनी पर पकड़ बना ली। रस्सा चढ़ने वाले एथलीट की तरह हाथ और पैरों का इस्तेमाल कर वह बड़ी तेजी से उस टहनी पर ऊपर चढ़ने लगा। अवश्य ही वह वृक्ष अपनी टहनी से उसे ऊपर खींच लेना चाहता था। उस वृक्ष की करुणा कमजोर की तरफ थी। वह वृक्ष किसी प्रकार का उचित निर्णय करने की स्थिति में नहीं था। मगरमच्छ अपना भोजन पाने के लिए प्रयास कर रहा था, और वह निरीह मानव अपने प्राणों की रक्षा के यत्न में लगा था। वह टहनी इतनी मजबूत नहीं थी कि वह विजय के भार को सहन कर लेती, लेकिन ऐसा हुआ। वह लपकता हुआ वृक्ष के सीने तक जा पहुँचा। क्या वह आलिंगन विस्मृत होने योग्य था? कहने को निष्प्राण वह वृक्ष, विजय के लिए प्राणदायी सिद्ध हुआ।

मगरमच्छ अपनी पूरी ताकत लगाकर अपने शिकार की तरफ उछला था लेकिन वह दोबारा चूक गया। विजय उस क्षण सुरक्षित हो चुका था। गोलू उस अविश्वसनीय लगने वाली घटना का साक्षी बना रहा। एक-एक सेकेण्ड ठहर-ठहर कर गुजरा था। आँखें जमाए उसने शिकार और शिकारी के उस अद्‌भुत खेल को देखा। एक छपाक की आवाज के साथ मगरमच्छ अपने प्रयास में असफल होकर पानी के बिस्तर पर गिरा। गोलू भी उस वृक्ष पर चढ़ गया और सुरक्षित ऊँचाई पर पहुँचकर बोला, "विजय ..." विजय की आँखों में प्राण बच जाने का संतुष्टि भाव मौजूद था। दोनों बस एक-दूसरे की तरफ देख रहे थे। कुछ बोल पाना फिलहाल कठिन था लेकिन उनकी भावनाओं का आदान-प्रदान हो गया था।

उत्तर की तरफ से टार्च और मशाल लेकर आते लोगों की भीड़ दिखाई दे रही थी। वे विजय और गोलू को पुकार रहे थे। खेतों में पानी उतना ही था, कहीं जांघों तक तो कहीं कमर तक। लेकिन वह अब बाधा नहीं थी।

*****

शेरो - शायरी

विनोद कुमार के.
सहायक, अंतरिक्ष विभाग

अर्ज़ किया है!!

मज़े के माहौल में यह शर्म भी क्या चीज़ होती है!! (2)

अगर है कोई ताल्लुक इस नाचीज़ से,
तो हर पल मज़े में गुज़र जाता है ॥

---*--*---

अगर है हसीं यह सारा जहां, तो जन्नत में क्या रखा है?? (2)

अगर है इतने उसूल दोस्ती में, तो मोहब्बत में क्या रखा है??

---*--*---

वह शराबी ही क्या जो शराब का नशा महसूस न करें?? (2)

और

वह आशिक़ ही क्या जो मोहब्बत का नशा महसूस न करें??

---*--*---

मुझे नहीं चाहिए वह शख्श जो मुझे आशिक़ न कह जाए!! (2)

अंखियों से पिला दे वह जन्नत-ए-शरबत जो मोहब्बत की लहरें आसुओं में बह जाए ॥

---*--*---

हाय मेरे महबूब..मुझे कोई शिक़वा नहीं है तुमसे..!! (2)

बस...ख़्वाबों में आ जाया करो..सिर्फ यही एक गुज़ारिश है तुमसे..!!

*****

सबरी

गुरु प्रसाद यादव
क. अनुवाद अधिकारी, इसरो मु.

सबरी सबको नहीं दिखती थी क्योंकि किसी को उससे क्या ही काम था? अपनी पीठ पर अपनी ही ऊँचाई का प्लास्टिक का एक थैला लिए वह सड़क पर कागज की गत्तियाँ, प्लास्टिक की बोतलें और ऐसी कोई अन्य वस्तु जो लोगों के काम की नहीं थी, इकट्ठा करती थी। उसे बेचने से जो मिल जाता, वही उसकी आमदनी थी। उसके सफेद मैले वस्त्र सड़क पर पड़े कूड़े से कुछ यूँ मेल खाते थे, कि कूड़े के बीच वह लोगों को बिना ध्यान दिये नहीं दिखती। नहीं, वह उन्हें जरूर दिखती थी जो उसकी जैसी जिंदगी की कल्पना तक नहीं कर सकते थे। वह उन्हें चौंकाती थी और सोंचने पर मजबूर करती थी। हर तरह के ऐशो-आराम में भी जिनके लिए जिंदगी जीना दूभर हो, उन्हें वह प्रेरणा दे जाती होगी। वे जो जिंदगी में शिकायतों से भरे हों, उन्हें वह पुन: सोचने पर विवश करती होगी। दिनभर और देर रात तक वह कूड़े के ढ़ेरों से अपने काम की चीजें तलाशती रहती। गर्मी, सर्दी और बारिश का भी मानो खयाल ना हो। उसकी चाल में एक तेजी होती और उसे देखकर ऐसा लगता जैसे किसी जरूरी काम से उसे अभी ही कहीं जाना हो। नेतराम चौराहे से यूनिवर्सिटी चौराहे तक वह विचरती रहती थी। इन सड़कों पर सुबह के नौ-दस बजे से रात दस बजे तक भीड़-भाड़ रहती है। लोगों का बाजार से सामान खरीदना और खाने-पीने की वस्तुएं लेना आदि लगा रहता है। यदि आप बहुत जल्दी में ना हों, और अपनी ही दुनियादारी में बहुत खोये ना हों, तो सबरी आप को दिख ही जाएगी। उसे फर्क नहीं पड़ता कि लोग क्या कर रहे हैं, कि दुनिया कहाँ जा रही है, कि कौन सा नेता क्या वादा कर रहा है आदि। उसका समूचा ध्यान उस पर होता था जिसे लोग अनुपयोगी समझ फेंक चुके हैं। उसकी उस अंधी दौड़ और बाकी दुनिया के अंधेपन में फर्क ही क्या है? सभी भाग रहे हैं और 'कल' को सुरक्षित करना चाहते हैं।

सबरी का 'कल' क्या है? उसका तो हर दिन एक जैसा है। उसे भूख लगती है, वह खा लेती है। थकने से नींद लगती है तो सो जाती है। उसके पास सपने नहीं हैं फिर भी वह पैसे इकट्ठा करती है। पति उसे छोड़ चुका है। बच्चों का पता नहीं है। वे कम उम्र में ही कमाने निकले और फिर मुड़कर पीछे नहीं देखे। ना उसे कोई याद करने वाला है, ना वह किसी को याद करती है। सुबह होते ही वह अपने रोज के उस काम पर यूँ निकल पड़ती जैसे उसके उस काम से ही दुनिया चल रही हो। वह तब तक चलती रहती जब तक वह थक नहीं जाती। पैसे बचाना उसकी आदत है, उसका कोई प्रयोजन नहीं है।

हर रात अपने रुपयों को गिनती थी। इसी में उसे सुख होता। रुपये गिन कर एक लंबी साँस भरती और अपनी झुग्गी में सो जाती। उसकी झुग्गी से सटी चार-पांच झुग्गियाँ और भी हैं। इनमें बांसफोड़ लोग रहते हैं। वे दिनभर बांस से टोकरियाँ, शू-स्टैण्ड आदि बनाते और शहर में बेच आते। ये झुग्गियाँ सड़क के फुटपाथ पर बनी हैं। कई बार इन्हें हटाया जा चुका है लेकिन ये भी तो किसी के घर हैं।दिन चाहे कहीं चलते-फिरते बीत जाए, रात तो सभी को आखिर कहीं ठहर कर बितानी होती है। अखबारों में शहर को स्वच्छ बनाने के अभियान के तहत झुग्गी-झोपड़ियों को हटाए जाने की बात अक्सर छपती रहती है। हालाँकि, उनमें रहने वालों का क्या होगा, इसका जिक्र नहीं होता। वैसे भी ये कौन लोग हैं जिनकी फिक्र की जानी चाहिए? बुलडोजर कई बार इन्हें तोड़ चुका है, नगरपालिकाकर्मी सहस्त्र बार इन्हें हट जाने की चेतावनी दे चुके हैं, लेकिन आखिर ये जाए कहाँ? एक जगह से खेदेड़ो तो वे दूसरी जगह अपना डेरा बना लेते हैं। शहर को इनसे पीछा छुड़ाना बड़ा मुश्किल लगता है।

सबरी की झुग्गी के ठीक सामने स्वास्तिक अपार्टमेंट बना है। हालाँकि यह कुछ ही महीनों पहले का है लेकिन वह कानूनी है, उसमें अमीर लोग लाखों का फ्लैट लेकर रहते हैं। सबरी अपनी झुग्गी में जमीन पर लेटे-लेटे कभी उन चमचमाते घरों को देखती और मन ही मन पूछती कि क्या उसके जैसे लोग एक दिन के लिए भी उन आलीशान और सुंदर आशियानों में रह सकेंगे। फिर अपने इस बेतुके सवाल पर आप ही हँस पड़ती। किस्मत वाले होते हैं जो पढ़ लिखकर ऐसे ऐशो-आराम को पाते हैं। फिर उसे यह सवाल चुभता कि आखिर उसकी किस्मत वैसी क्यों हैं? पर इतना सोचना विचारना उसके वश में कहाँ? नींद उसे सपनो की दुनिया में ले जाती जहाँ वह कुछ और हो जाती थी। कभी अच्छे पकवान खाती, तो कभी अच्छे घरों की मालकिन बन जाती। ये सपने उसकी रिक्तता को उसके जाने बगैर ही भर देते थे और अगली सुबह वह किस्मत की ऊँच-नीच जैसी बातें भूल जाती।

सुबह जब भी उसकी आँख खुलती वह अपना थैला लेती और सड़क पर निकल जाती। शहर रात-भर मानों सड़कों पर कचरा उगलता था। सड़क के दोनों तरफ कूड़े का अंबार होता। सबरी की आँखे चमक जाती। वह सड़क पर कभी दांयी ओर तो कभी बांयी ओर जिगजैग तरीके से फुर्तीली चाल में चलती।

एक सुबह जब वह यूनिवर्सिटी चौराहे के पास पहुँची तो कूड़े के ढ़ेर में उसे एक चमकती वस्तु दिखाई दी। पास पहुँचने पर उसने देखा कि वह एक सुनहरे रंग की मूर्ति थी। अधिक बड़ी न थी लेकिन एकाध किलो वजन रहा होगा। वह उसे अपने हाथ में लिए कुछ देर वहीं खड़ी रही। उसे सोने की परख न थी, लेकिन मूर्ति उसे मामूली नहीं लग रही थी। उसने मूर्ति को डरे सहमे नमन किया और अपने थैले में रख लिया। वह अब यूँ चलने लगी जैसे कि वह प्रात:काल की सैर पर निकली हो। उसकी फुर्ती नदारद थी। मन में एक तूफान चलने लगा था। “क्या मूर्ति सोने की है?” उसने स्वयं से पूछा। इसका पता लगाना भी तो मुश्किल था। “क्या वह इसे मंदिर में छोड़ आए?” या वहीं कूड़े मे फेंक दे?”

तरह-तरह के सवाल उसके मन को अशांत कर रहे थे। उसके पैर उसको लिए आगे बढ़े जा रहे थे। वह शून्य में देखती यूँ चली जा रही थी मानो बिल्कुल अकर्मण्य और उद्देश्यविहीन हो। उसके लिए निर्णय करना मुश्किल था कि वह क्या करे। उसने पीछे मुड़कर देखा। सड़क खाली थी। कहीं किसी का अता पता नहीं था।

उसने थैला आगे किया और उसमें पड़ी मूर्ति को देखने लगी। फिर उसने उसे हाथ में ले लिया। करीब से देखने लगी। मूर्ति बिल्कुल सोने की ही लगती थी। उसने सोचा कि यदि मूर्ति सोने की है, तो उसकी कीमत तो बहुत अधिक होगी। लेकिन मूर्ति की क्या कीमत? भगवान की मूर्ति को कौन खरीदेगा? सबरी को पता नहीं था कि भगवान की मूर्तियाँ चुराई भी जाती है। भगवान ने इंसान की एक नस्ल बनाई लेकिन इंसान ने अपनी सुविधा अनुसार अनेक भगवानों का सृजन कर लिया। इंसान भगवान बनाता है, बेचता है और चुरा भी लेता है।

वह अपनी झुग्गी वापस लौट आई। थैले में से मूर्ति निकालकर वह जमीन पर बिछी चटाई पर बैठ गई। वह मूर्ति को ऐसे देखती जैसे मूर्ति उसे स्वयं बता दे कि उसके साथ क्या करना है। झुग्गी के सामने स्वास्तिक अपार्टमेंट में लोग जागने लगे थे। सबरी झुग्गी से बाहर विचार शून्यता की स्थिति में अपार्टमेंट की तरफ देख रही थी। कुछ लोग अपनी बालकनी में खड़े होकर उगते सूरज को देख रहे थे। कुछ लोग शरीर की अकड़न दूर करने के लिए स्ट्रेचिंग कर रहे थे। कुछ अजीब ढ़ंग से कमर और पैर हिला रहे थे। सबरी अचानक हँस पड़ी। उसने कभी इन लोगों को वहाँ ऐसा करते पहले कभी नहीं देखा था। उसकी सुबहें तो सड़क पर कूड़ों के अंबार में बीतती थीं। मूर्ति ने उसके जीवन की रेलगाड़ी की चेन खींच दी थी। वह पूं-पां कर वहीं रूक गई थी।

मूर्ति को चटाई के नीचे छिपाकर वह अपना थैला लिए बाहर निकल आई। लेकिन उसका मन उसके साथ न था। अनमने ढ़ंग से वह चले जा रही थी। लक्ष्मी चौराहे से घूम कर चली आई लेकिन थैला आधा ही भरा। दुकाने खुल चुकी थीं और सड़कों पर लोगों का आवागमन बढ़ने लगा। सबरी बहुत बेचैन थी। उसने ना कुछ खाया ना पिया, थैला लेकर दोबारा बाजार की तरफ निकल पड़ी। वह सोने की दुकान के सामने से गुजरी। वहाँ एक अलग ही चमक थी। शीशे लगे केसों में सोने के आभूषणों को गौर से देखा और मन ही मन मूर्ति का उनसे मिलान करने लगी। मूर्ति भी वैसी ही जान पड़ती थी। उसे अब थोड़ा यकीन होने लगा कि मूर्ति सोने की ही है।

2

दिन चढ़ते-चढ़ते कर्नलगंज मंदिर से सोने की मूर्ति की चोरी की खबर आग की तरह शहर में फैल गई। लोग जगह-जगह इस बात की चर्चा कर रहे थे। चौराहों पर चाय की चुस्कियों के बीच लोग इसी बारे में तरह तरह की बातें कर रहे थे। नेतराम चौराहे पहुँचते-पहुँचते सबरी ने भी इस खबर को सुन लिया। उसका शरीर डर से काँपने लगा। वह उल्टे पाँव अपनी झुग्गी की तरफ लौट आई। उसके

मन में अब तरह-तरह के खयाल आने लगे। "क्या हो यदि पुलिस को मूर्ति उसके पास से मिल जाए? यदि किसी को उसके यहाँ से मूर्ति मिल जाए?" उसका मन असंख्य आशंकाओं से भरने लगा।

वह दिन भर कुछ खा-पी ना सकी। कभी बाहर निकलती और मनमोहन चौराहे तक होकर वापस आ जाती। थैला साथ में होकर भी वह कूड़ों से कुछ बीन ना पाती। उसे यह भी संशय होता कि लोग उसके उस बर्ताव पर गौर ना कर रहे हों? चलते-चलते वह कर्नलगंज के उस मंदिर तक पहुँच गई जहाँ से मूर्ति चोरी हुई थी। वहाँ पुलिस के जवान तैनात थे। कुछ पुलिस के अफसर अपनी गाड़ियों से वहाँ आ और जा रहे थे। माहौल तनावपूर्ण था। पुजारी मंदिर के अंदर ही था और पुलिस अफसरों के सवालों के जवाब दे रहा था। सबरी का मन हुआ कि वह जाकर पुलिस वालों को सब कुछ बता दे और इस झंझट से मुक्ति पा ले। लेकिन फिर उसे ऐसा करने की हिम्मत ना हुई। वह वापस लौट गई।

शाम होते-होते सबरी का हाल बुरा था। शहर में हर तरफ रोशनी और चहल-पहल थी लेकिन उसके मन में एक भयावह अंधेरे ने घर कर लिया था। वह बेसब्री से रात होने का इंतजार करने लगी। उसे मूर्ति से किसी प्रकार का लाभ प्राप्त करने का खयाल कब का विलुप्त हो चुका था। अब वह यह भी सोचना नहीं चाहती थी कि मूर्ति सोने की है भी या नहीं। मूर्ति के सन्मुख हो वह उसमें छिपे भगवान से प्रार्थना करने लगी कि किसी तरह वह उसे मंदिर तक पहुँचा दें। वह देवी-देवताओं से अवश्य डरती थी, हालाँकि उसने उनसे कभी कुछ मांगा नहीं था। क्या मांगती? उसे इतनी फुरसत भी नहीं थी कि वह याचना करे। लेकिन आज उसे उस प्राण का और जीवन का भय था जो उस घनघोर अभाव और गरीबी में पल रहा था। वह अपने को बारंबार कोसती कि उसने क्यों ही वह मूर्ति उठा ली।

रात के ग्यारह बजे थे। वह अपने थैले में मूर्ति रख कर्नलगंज की तरफ बढ़ चली। उसे ऐसा महसूस होता मानों पूरे विश्व का भार उसके सिर आ पड़ा है। थैले में वही गत्तियाँ और प्लास्टिक पड़ी थी जो उसने उस सुबह मूर्ति मिलने से पहले इकट्ठा किया था। सड़क पर अब इक्का-दुक्का लोग रह गए थे। कर्नलगंज चौराहे पर पुलिस वालों को देख सबरी के प्राण सूखने लगे। फिर भी वह उसी तरफ चलने लगी। वह किसी तरह उस परेशानी से उबर जाना चाहती थी।

मंदिर के सामने तीन-चार पुलिस वाले अनमने ढ़ंग से ड्यूटी कर रहे थे। खीझ उनके चेहरों पर स्पष्ट देखी जा सकती थी। प्लास्टिक की कुर्सियों पर दोनों पैर एक सौ साठ डिग्री पर फैलाए और पीठ को कुर्सी पर टिकाए वे चोर के वापस आकर मूर्ति लौटाने का इंतजार कर रहे थे। चौबीस घंटे की नौकरी और न्यूनतम तनख्वाह में उनसे और क्या ही अपेक्षा की जा सकती है। सबरी को देख वे ना ध्यान देने वाला भाव चेहरे पर लाए। सबरी अपराध भाव और सजा पाने के भय से इतनी अधिक ग्रस्त थी कि उसमें उस क्षण कुछ भी कर गुजरने का साहस आ गया था। चेहरे पर जबरन मुस्कान उकेरती हुई वह पुलिस वालों में से एक के पास जा कर बोली – "साहब..." पुलिस वाले को ऐसा लगा कि वह भीख मांगने आई है। वह खीझकर उसे जाने को बोला। लेकिन सबरी वहीं रूकी रही। पुलिस

वाले ने विवश हो कहा, "क्या बात है? क्या चाहिए तुम्हें?" "कुछ नहीं, साहब... ई मूर्ति..." बाकी आवाज उसके गले में अटक गई। पुलिस वालों को मूर्ति सुनकर थोड़ा आश्चर्य हुआ। सामने बैठे पुलिसकर्मी ने कहा, "क्या मूर्ति?"

सबरी ने झट से मूर्ति निकाल सिपाही के आगे कर दी। उसका पैर कांप रहा था। भय से शरीर पर पसीने की बूंदें उभर आई थीं। उसका कंठ सूख रहा था। उसे लगा कि अगले ही क्षण पुलिस वाले उस पर टूट पड़ेंगे। लेकिन सबरी, बेचारी! जिसने अपने जीवन में ठीक से कभी सोने को देखा तक ना हो, उसे सोने की क्या ही परख होगी।

पुलिस वाले ने मूर्ति को देख उसके पीतल के होने के बारे में तुरंत जान लिया। वैसे भी जो मूर्ति कर्नलगंज के उस मंदिर से गायब हुई थी, वह पाँच किलो की मूर्ति थी। फिर भी पुलिस वाले ने डपटते हुए पुछा, "कहाँ मिली ये तुम्हें?" सबरी का आधा प्राण हवा हो चुका था। वह कांपते स्वर में बोली, "साहब, आज ही सुबह मुझे यह कूड़े के ढ़ेर में मिली"।

"और तुमने क्यों उठा ली?"

"साहब..."

"तुम्हें क्या लगा कि यह सोने की है?"

"साहब..."

पुलिस वालों को उसकी बेचारगी और अज्ञानता पर तरस आ गया।

"जाओ। ये मूर्ति वह नहीं है जो चोरी हुई है"।

"साहब..."

सबरी के लिए "जाओ" ही पर्याप्त था। उसे उस बला से छुटकारा चाहिए था, सो मिल गया था।

*****

अप्रैल 2021 से सितंबर 2021 के दौरान अंतरिक्ष भवन में संपन्न विभिन्न आयोजन/क्रिया-कलाप :

- **21 मई 2021 – "आतंकवाद विरोधी दिवस"**

प्रतिवर्ष की भांति 21 मई 2021 को "आतंकवाद विरोधी दिवस" मनाया गया। कोविड-19 वैश्विक महामारी के कारण सभी कर्मचारियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए तथा सामूहिक जनसभा से बचने के लिए सभी ने अपने कार्यस्थल से शपथ ली।

- **21 जून 2021 – "अंतरराष्ट्रीय योग दिवस"**

21.06.2021 को 7वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। कोविड-19 परिस्थितियों के कारण दिनांक 21.06.2021 को सुबह 07:00 बजे सामान्य योग प्रोटोकॉल (सी.वी.पी.) कार्यक्रम के तहत घर से ही सुरक्षित रूप से कर्मचारियों ने अपने परिजनों के साथ योगाभ्यास में भाग लिया। विभाग की वेबसाइट में वीडियो की व्यवस्था की गई थी।

- **अंतरिक्ष भवन में 26.07.2021 से 30.07.2021 तक खादी उत्पादों की प्रदर्शनी-सह-बिक्री**

भारत की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ के भाग के रूप में, "आजादी का अमृत महोत्सव" के अवसर पर अंतरिक्ष भवन में खादी उत्पादों की प्रदर्शनी-सह-बिक्री अयोजित की गई। कोविड नियमों का सख्ती से अनुपालन करते हुए सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने इस सुविधा का लाभ उठाते हुए खादी उत्पादों को बढ़ावा देने की ओर महत्वपूर्ण योगदान दिया।

- **हिंदी कार्यशाला**

1. 29 जून 2021 – अप्रैल-जून, 2021 तिमाही के लिए अंतरिक्ष भवन के नव नियुक्त सहायकों, उच्च श्रेणी लिपिकों, कनिष्ठ वैयक्तिक सहायकों एवं आशुलिपिक के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। सत्र संचालन डॉ. महेश्वर घनकोट, सहायक निदेशक (रा.भा.) द्वारा किया गया।

2. 21 सितंबर 2021 – जुलाई से सितंबर 2021 तिमाही के लिए 21 सितंबर 2021 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इन कार्यशालाओं में राजभाषा हिंदी से संबंधित जानकारी दी गई तथा कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग से संबंधित विषयों पर चर्चा की गई। सत्र संचालन श्रीमती रश्मि ठाकुर, व. अनुवाद अधिकारी द्वारा किया गया।

➢ **29 जुलाई 2021 – विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 162वीं बैठक**

29 जुलाई 2021 को प्रथम बार वीडियो के माध्यम से विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 162वीं बैठक का आयोजन संयुक्त सचिव, अं.वि. की अध्यक्षता में किया गया। उक्त बैठक में अंतरिक्ष विभाग के सभी केंद्रों/यूनिटों के राजभाषा के प्रगामी प्रयोग तथा कार्यों की समीक्षा की गई।

➢ **75वें स्वतंत्रता दिवस का आयोजन**

अंतरिक्ष भवन में 15 अगस्त 2021 को 75वां स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। सचिव, अं.वि./अध्यक्ष, इसरो द्वारा राष्ट्रध्वजारोहण किया गया। "आजादी का अमृत महोत्सव" के भाग के रूप में कर्मचारियों द्वारा इस अवसर पर देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए गए।

➢ **19 अगस्त 2021 – "सद्भावना दिवस"**

इस अवसर पर सद्भावना प्रतिज्ञा ली गई।

➢ अंतरिक्ष भवन में हिंदी पखवाड़ा आयोजन

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसरण में अंतरिक्ष भवन में 14.09.2021 से 30.09.2021 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान सरल अनुवाद, हिंदी निबंध, हिंदी एकल गायन, वर्ग पहेली, हिंदी टंकण, हिंदी पाठ-पठन, ऑनलाइन सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी जैसी कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन सभी प्रतियोगिताओं में सभी ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया और हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषी के लिए अलग-अलग पुरस्कार दिए गए। इस अवसर पर कर्मचारियों के उन बच्चों को भी पुरस्कार प्रदान किए गए जिन्होंने 10वीं तथा 12वीं की अंतिम परीक्षा में हिंदी में सर्वाधिक अंक प्राप्त किए।

14 सितंबर 2021 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के अनुदेश पर प्रथम बार विभाग के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी दिवस के अवसर पर "राजभाषा प्रतिज्ञा" दिलाई गई, जिससे कि वे संविधान द्वारा दिए गए दायित्वों का निर्वहन कर सकें। कोविड-19 के मद्देनजर यह प्रतिज्ञा संबंधित कार्यस्थलों से ली गई।

प्रतिज्ञा

ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी

विविध प्रतियोगिताओं की चित्रमाला

➢ अंतरिक्ष भवन में कोविड-19 टीकाकरण अभियान

कोविड-19 वैश्विक महामारी को दूर करने तथा सभी की सुरक्षा के लिए सामाजिक दायित्व के रूप में अंतरिक्ष विभाग द्वारा कई चरणों में अपने सभी कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों के लिए टीकाकरण अभियान चलाया गया।

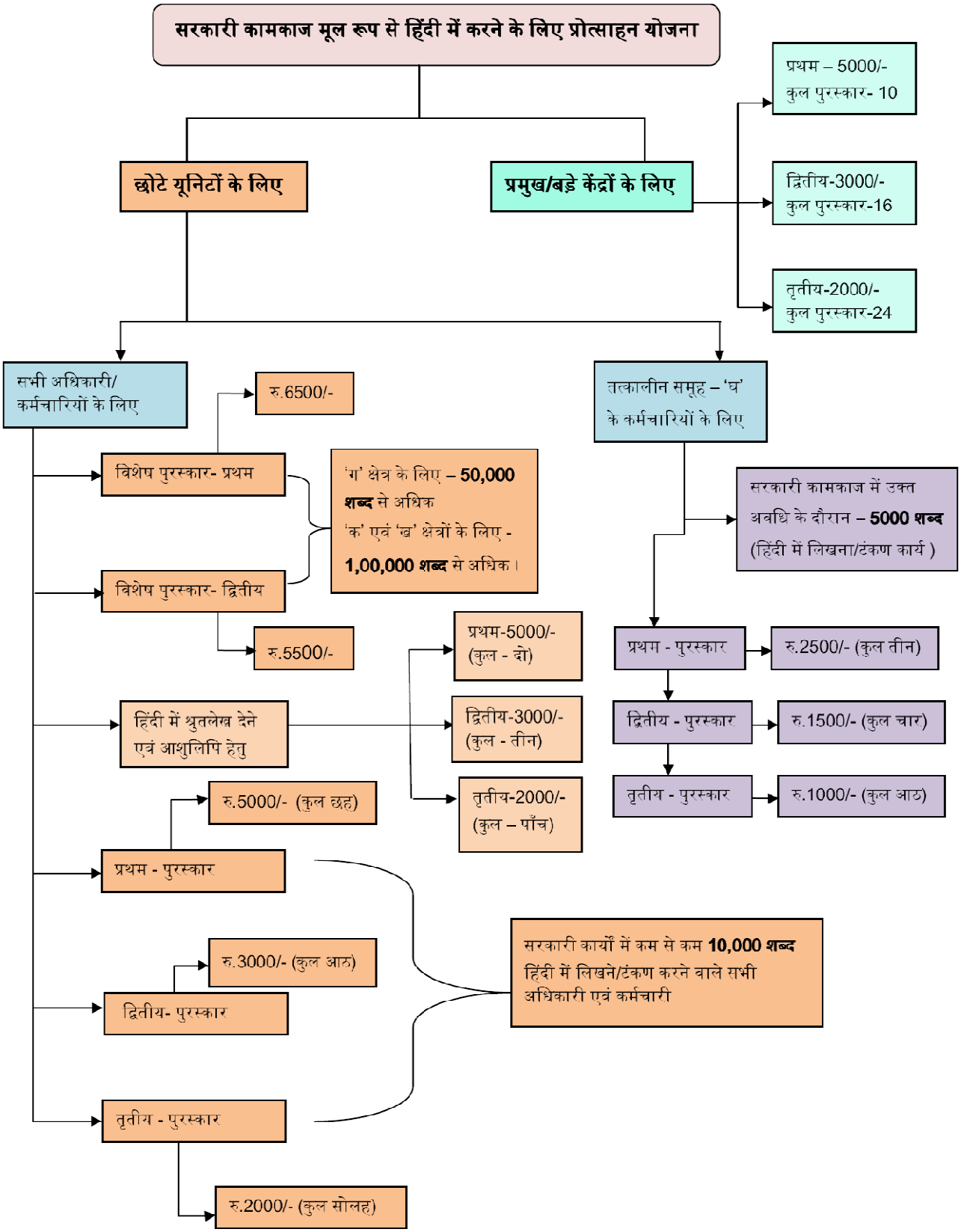
सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना
छोटे यूनिटों के लिए
प्रमुख/बड़े केंद्रों के लिए
प्रथम – 5000/-
कुल पुरस्कार- 10
द्वितीय-3000/-
कुल पुरस्कार-16
तृतीय-2000/-
कुल पुरस्कार-24
सभी अधिकारी/
कर्मचारियों के लिए
रु.6500/-
विशेष पुरस्कार- प्रथम
'ग' क्षेत्र के लिए – 50,000 शब्द से अधिक
'क' एवं 'ख' क्षेत्रों के लिए - 1,00,000 शब्द से अधिक।
विशेष पुरस्कार- द्वितीय
रु.5500/-
हिंदी में श्रुतलेख देने एवं आशुलिपि हेतु
प्रथम-5000/- (कुल - दो)
द्वितीय-3000/- (कुल - तीन)
तृतीय-2000/- (कुल – पाँच)
रु.5000/- (कुल छह)
प्रथम - पुरस्कार
रु.3000/- (कुल आठ)
द्वितीय- पुरस्कार
तृतीय - पुरस्कार
रु.2000/- (कुल सोलह)
तत्कालीन समूह – 'घ' के कर्मचारियों के लिए
सरकारी कामकाज में उक्त अवधि के दौरान – 5000 शब्द (हिंदी में लिखना/टंकण कार्य)
प्रथम - पुरस्कार
रु.2500/- (कुल तीन)
द्वितीय - पुरस्कार
रु.1500/- (कुल चार)
तृतीय - पुरस्कार
रु.1000/- (कुल आठ)
सरकारी कार्यों में कम से कम 10,000 शब्द हिंदी में लिखने/टंकण करने वाले सभी अधिकारी एवं कर्मचारी

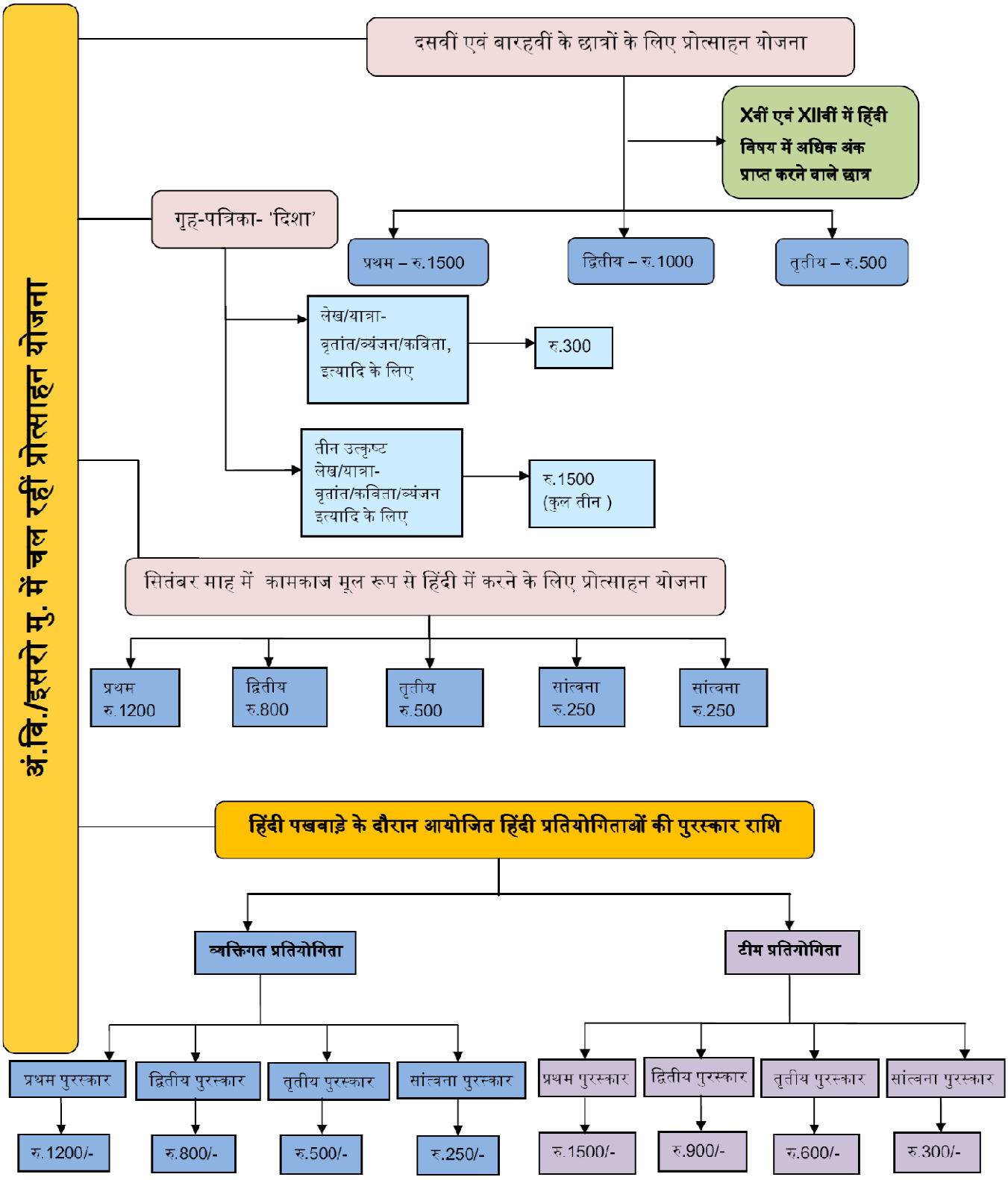
अं.वि./इसरो मु. में चल रहीं प्रोत्साहन योजना
दसवीं एवं बारहवीं के छात्रों के लिए प्रोत्साहन योजना
Xवीं एवं XIIवीं में हिंदी विषय में अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र
प्रथम – रु.1500
द्वितीय – रु.1000
तृतीय – रु.500
गृह-पत्रिका- 'दिशा'
लेख/यात्रा-वृतांत/व्यंजन/कविता, इत्यादि के लिए
रु.300
तीन उत्कृष्ट लेख/यात्रा-वृतांत/कविता/व्यंजन इत्यादि के लिए
रु.1500 (कुल तीन)
सितंबर माह में कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना
प्रथम रु.1200
द्वितीय रु.800
तृतीय रु.500
सांत्वना रु.250
सांत्वना रु.250
हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं की पुरस्कार राशि
व्यक्तिगत प्रतियोगिता
टीम प्रतियोगिता
प्रथम पुरस्कार
द्वितीय पुरस्कार
तृतीय पुरस्कार
सांत्वना पुरस्कार
प्रथम पुरस्कार
द्वितीय पुरस्कार
तृतीय पुरस्कार
सांत्वना पुरस्कार
रु.1200/-
रु.800/-
रु.500/-
रु.250/-
रु.1500/-
रु.900/-
रु.600/-
रु.300/-

पुरस्कार

'दिशा' के 11वें एवं 12वें अंक में प्रकाशित तीन उत्कृष्ट रचनाओं के लिए लेखकों को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए :

11वां अंक

लाख दु:खों की एक दवा है हँसी

श्रीमती पद्मा एन.
व. परियोजना सहायक
इसरो मु.

गर इजाजत हो

श्री गुरुप्रसाद यादव
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
इसरो मु.

हमें अपने घर जाना है

श्री तपन कुमार पाण्डेय
उच्च श्रेणी लिपिक
अंतरिक्ष विभाग

12वां अंक

छोटे आदमी से बड़ा आदमी

श्री गोविंदराजु वी.
स्टाफ कार चालक - 'ए'
अंतरिक्ष विभाग

चित्रदुर्ग की यात्रा

श्री नंजेगौड़ा बी. आर.
लघु वाहन चालक - 'ए'
इसरो मु.

जन्म होयसला राज्य का

श्री विनोद कुमार के.
सहायक (अं.वि.)
अंतरिक्ष विभाग

आप सभी को

हार्दिक बधाई

खुशहाल सेवानिवृत जीवन की शुभकामनाएं : अप्रैल 2021 से सितंबर 2021 तक अं.वि./इसरो मु. के अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची:

सुजा अब्राहम
वैज्ञा./अभि.-'एस.जी.'
30 अप्रैल 2021

नलिनी आर. नायक
वैयक्तिक सचिव
30 अप्रैल 2021

शंकरन कुट्टी पी.
विशेष कार्य अधिकारी
30 अप्रैल 2021

लुसी जार्ज
वैज्ञा./अभि.-'एस.ई.'
31 मई 2021

ओमना पॉल जार्ज
वैज्ञा./अभि.-'एस.जी.'
31 मई 2021

पेंय्याचलैया जी.
व. परियोजना परिचारक
31 मई 2021

श्रीनिवास प्रसाद के.
वैज्ञा./अभि.-'जी.'
31 मई 2021

अलगेसन जी.
व. प्रधान लेखा एवं आं.वि.स.
31 मई 2021

वेंकिटाकृष्णन पी.वी.
विशिष्ट वैज्ञानिक
31 मई 2021

शमाइल फातिमा
व. अनुवाद अधिकारी
30 जून 2021

श्यामल कुमार कानूनगो
उत्कृष्ट वैज्ञानिक
30 जून 2021

सिद्धार्थन वी.
वैज्ञा./अभि.-'जी.'
31 जुलाई 2021

राम प्रकाश
व. परियोजना सहायक
31 जुलाई 2021

सुरेश एम. आर.
वैज्ञा./अभि.-'जी.'
31 जुलाई 2021

वासगी उमाशंकर
व. परियोजना सहायक
31 अगस्त 2021

सरला
संयुक्त निदेशक (रा.भा.)
31 अगस्त 2021

सुस्वागतम्

दिशा टीम इन सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों का अंतरिक्ष भवन में हार्दिक स्वागत एवं उनके उज्वल भविष्य की कामना करती है।

अं.वि./इसरो मु. के अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची:

अमन राज
क. वैयक्तिक सहायक
15 अप्रैल 2021

अमित कंडारी
वैज्ञा./अभि.-'एस.जी.'
10 अगस्त 2021

बालामुरुगण सी.
वैज्ञा./अभि.-'एस.एफ.'
10 अगस्त 2021

दारुकेशा बी.एच.एम.
वैज्ञा./अभि.-'एस.जी.'
10 अगस्त 2021

*****

"दिशा के 12वें अंक पर पाठकों की प्रतिक्रियाएं"

दिशा के 12वें अंक पर हमें अनेक प्रबुद्ध पाठकों की ढ़ेर-सारी प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं। जगह की कमी के कारण इन सभी प्रतिक्रियाओं को, उनके संक्षिप्त रूप में, यहाँ प्रकाशित किया गया है।

आपकी गृह-पत्रिका 'दिशा' का बारहवां अंक ई-मेल के माध्यम से इस कार्यालय में प्राप्त हुआ है। आपके प्रयास सराहनीय है। पत्रिका का संपादन बहुत अच्छा उभर कर आया है।

राजभाषा विंग, कॉफी बोर्ड, बेंगलूरु

अंतरिक्ष विभाग की गृह-पत्रिका 'दिशा' (मई 2020-मार्च 2021 अंक) प्राप्त हुई, धन्यवाद। यह ई-पत्रिका रोचक लगी जिसमें कई पठनीय सामग्री एवं रंगीन चित्र समाहित हैं। हिंदी में, डिजिटल रूप में प्रकाशित इस पत्रिका के माध्यम से न केवल हिंदी का प्रचार-प्रसार होगा बल्कि पाठकों के ज्ञान में वृद्धि होगी। उत्तम पत्रिका के प्रकाशन के लिए संपादक-मंडल को हार्दिक बधाइयां।

डॉ. लीना गोविंद गहाणे, उप सलाहकार, (एन.ए.ए.सी.)

बिना देरी किए हुए एक ही बार में पूरी पत्रिका का अध्ययन स्वयं किया। पत्रिका बहुत ही रोचक, ज्ञानवर्धक तथा आपके कार्यालय के संपूर्ण क्रियाकलापों का एक दर्पण साबित हो रही है। साहित्यिक रचनाओं के साथ तकनीकी विषयों को भी शामिल किया गया है। यह गागर में सागर भरने के समान जैसा लगा। कोरोना काल में भी बड़ी सक्रियता के साथ कार्यालय में घटित गतिविधियों का आयोजन संपन्न किया है, इसका प्रमाण दिशा में बखूबी से देखने को मिलता है। पत्रिका का आवरण, कलेवर, चित्र संकलन तथा संपादन अति सराहनीय है। लेखकवृंद एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। आशा करता हूँ कि भविष्य में भी दिशा एक पथप्रदर्शक की तरह राह दिखलाती रहेगी।

जगदीश चंद्र शाह, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, विद्युत एवं उपकरण प्रशिक्षण संस्थान, भारतीय वायु सेना, जालहल्ली पूर्व, बेंगलूरु

पत्रिका वास्तव में बहुत ही रोचक एवं सूचनाप्रद है। कर्नाटक की विविध संस्कृति एवं दर्शनीय स्थलों को उत्कृष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही कविता एवं राजभाषा नियम पत्रिका को और भी समृद्ध बना रहे हैं। आपके मार्गदर्शन में ऐसी प्रस्तुति बहुत ही प्रेरणादायी है। आपको एवं संपूर्ण पत्रिका टीम को हार्दिक बधाई। आशा है भविष्य में भी हमें दिशा के रसास्वादन का अवसर मिलता रहेगा।

रुमकी दत्ता, सहायक निदेशक (रा.भा.), भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद

अंतरिक्ष विभाग/इसरो मुख्यालय की गृह-पत्रिका 'दिशा' के बारहवां अंक का डिजिटल संस्करण ई-मेल द्वारा प्राप्त हुआ। पत्रिका की उत्तरोत्तर सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

बी. श्रीधर, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, सी.पी.आर.आई., बेंगलूरु

पत्रिका में दिए गए लेखन, कविता, स्वाद, राजभाषा संबंधित पुरस्कार आदि सराहनीय है। आशा है कि आप इस तरह के विवरण भिजवाने का प्रयास करते रहेंगे।

जोयदीप देब, प्रशासनिक अधिकारी, जवाहर नेहरु उन्नत वैज्ञानिक अनुसंधान केंद्र, बेंगलूरु

पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। सभी लेख पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएं।

सौजन्या, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.), प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यलय, बेंगलूरु

गृह-पत्रिका के डिजिटल रूप में प्रकाशन के लिए संपादन मंडल के समस्त सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई। 'दिशा' में शामिल किए गए सभी लेख बड़े ही रोचक एवं उच्च कोटि के हैं। पत्रिका में स्वास्थ्य, प्रकृति, विज्ञान एवं राजभाषा गतिविधियों का अनूठा संगम दृष्टिगोचर है। 'पासवर्ड सिर्फ पासवर्ड नहीं' लेख वर्तमान समय के हिसाब से बहुत ही सटीक लगा। पुन: संपादन मंडल एवं लेखकों को बधाई। ईश्वर से प्रार्थना है कि 'दिशा' अनवरत रूप से प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती रहे।

शत्रुघ्न, सहायक निदेशक (रा.भा.), एम.सी.एफ., हासन

आपके प्रोत्साहन एवं प्रतिक्रियाओं के लिए दिशा की संपादकीय समिति आभार व्यक्त करती है।

*****

इसरो isro